समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मार्च २०२१ • वर्ष ७२ • अंक ०३

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

२८ फरवरी २०२१ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में जूम ऐप के माध्यम से राँची से सम्मिलित (बायें से) सर्वश्री रतनलाल बंका, राजकुमार केडिया, विनय सरावगी, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, बसंत मित्तल, श्रीमती पुष्पा भुवालका एवं अनिल अग्रवाल।

भारत में समाजवादी आंदोलन के पुरोधा, महान राजनेता, राष्ट्रचिंतक एवं भविष्यद्रष्टा

डॉ. राममनोहर लोहिया

(२३ मार्च १९१० – १२ अक्तूबर १९६७)

की जयंती पर विनम्र-कृतज्ञ पुष्पांजलि!

इस अंक में –

- अध्यक्षीय: संस्कारों के प्रकाश से तिरोहित होंगी कुरीतियाँ!
- सम्पादकीय: मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकलो भाग!
- रपट: राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक, महाराष्ट्र सम्मेलन का चुनाव, राँची जिला सम्मेलन का अधिवेशन, प्रांतीय गतिविधियाँ
- होली में उपाधियाँ
- आलेख : कुछ तो फूल खिलाये हमने और कुछ फूल खिलाने हैं; एक भाषा की विकास यात्रा

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष

श्री राज के. पुरोहित

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ!!

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

समाज विकास

◆ मार्च २०२१ ◆ वर्ष ७२ ◆ अंक ०३
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक — पृष्ठ संख्या

- **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** ४-५
  मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकलो भाग!
- **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ६
  संस्कारों के प्रकाश से तिरोहित होंगी कुरीतियाँ!
- **केन्द्रीय / प्रांतीय समाचार** ७-९, ११-१७, २०-२४
- **आलेख : संतोष सराफ** १०
  कुछ तो फूल खिलाये हमने...
- **होली में उपाधियाँ** १८-१९
- **देव-स्तुति : डॉ. जुगल किशोर सर्राफ** २७
- **आलेख : अतुल कनक** २९-३०
  एक भाषा की विकास यात्रा
- सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत ३१-३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

समाचार सार

गुवाहाटी मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा का 'कर्तव्यनिष्ठ नारी सम्मान'

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन गुवाहाटी महिला शाखा ने समाज सेवा, साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में उत्कृष्ट अवदान हेतु असम साहित्य सभा की उपाध्यक्षा मृणालिनी देवी शर्मा तथा श्रीमती मणिकुंतला भट्टाचार्य को राजस्थानी चुनरी ओढ़ाकर, फूलाम गामोछा, पुष्प गुच्छ तथा सम्मान पत्र से सम्मानित किया। इस मौके पर अध्यक्षा श्रीमती कंचन केजरीवाल, उपाध्यक्षा रेणु चौधरी, सरोज जालान, कोषाध्यक्षा पुष्पा खेमका, सुनीता क्याल, सत्या भातरा, अनिता अग्रवाल, पुष्पा बुकलसरिया, यशोदा अग्रवाल, आशा चौधरी आदि मौजूद थी।

मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकलो भाग!!

सामाजिक जीवन में विकृतियाँ पनप रही हैं, इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि मनुष्य अपना असली चेहरा छिपाकर मुखौटों को अपना रहा है। कामयाब माने जाने वाले एवं प्रतिष्ठित लोग ध्यान आकर्षित करने के लिये कार्य करते हैं। स्वभाव से अहं और अधिक पाने की सोच पाले रखते हैं। इस सोच में समस्या यह है कि अहं की संतुष्टि नहीं होती है। हम या तो 'श्रेष्ठता मनोग्रंथि' से ग्रसित रहते हैं या मनोनुकूल नहीं होने पर हीन भावना से ग्रसित रहते हैं। हम हमेशा श्रेष्ठतर से श्रेष्ठतम बनने की होड़ में लगे रहते हैं। यह अहं हम पर हावी रहता है एवं हम अधिकांश कार्य अनजाने में दूसरो की प्रशंसा प्राप्त करने के उद्देश्य से करने लगते हैं। फिर दूसरों के अहं से मुकाबला करते हुए हम अपने अहं के आग में और घी देते हैं। इस मनोवृत्ति के दो पहलू हैं। पहला यह कि जो हम वास्तव में हैं, उसको दिखाना नहीं चाहते। दूसरा जो हम नहीं है एवं होना चाहते है, वह दिखाने का प्रयास करते हैं। इस मानसिकता के पीछे सोच यह रहती है कि जितना हम प्रदर्शित करेंगे, उतनी ही समाज में हमारी औकात, मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उन्हें यह चिंता रहती है कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं? अब उनसे कोई पूछे कि लोग क्या सोचते हैं, यह भी अगर हम ही सोचेंगे तो फिर लोग क्या सोचेंगे?

एक फोटोग्राफर के बाहर बोर्ड लगा हुआ था –

२०रु. में आप जैसे हैं, वैसा ही फोटो खिंचवायें

३०रु. में आप जैसा सोचते हैं वैसा फोटो खिंचवायें

५०रु. में आप लोगो को जैसा दिखाना चाहते है, वैसा फोटो खिंचवायें।

बाद में उस फोटोग्राफर ने अपने संस्मरण में बताया – मैंने जीवन भर फोटो खीचें। किसी ने २०रु. वाला फोटो नहीं खिंचवाया। सभी ने ५०रु वाला ही खिंचवाया।

यह एक बयाने हकीकत है। सदैव हम कृत्रिम जिंदगी जीते रहते हैं। पुरुषार्थ, मनोबल, व्यक्तित्व एवं चरित्र रूपी धन की जगह "मैं" का अहं पालते हैं। इसी कारण समाज में श्रेष्ठ दिखने की प्रतियोगिता हो रही हैं। दूसरो की स्वयं से तुलना करते-करते हम स्वयं के वास्तविक स्वरूप को ही भूल जाते हैं।

"मैं" एक बहुत ही छोटा शब्द है किन्तु जब यह मनुष्य की सोच पर घर कर लेता है तो बहुत भारी हो जाता है। मनुष्य का स्वयं पर नियंत्रण डगमगाने लगता है। सामान्य परिस्थिति में मनुष्य को दीर्घकालीन लाभ के लिये तात्कालिक लाभ का त्याग करना पड़े तो हिचकिचाना नहीं चाहिए। पर जब "मैं" का अहं उसके सिर पर चढ़कर बोलने लगता है तो उसके लिये तात्कालिक लाभ ही सर्वोपरि हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों की पहचान होती है –

१) उन्हें हाँ मे हाँ मिलानेवाले अपने लगने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति उनके इर्द-गिर्द मंडराते रहते हैं।
२) स्वयं उन्हें शेखी बघारने में मजा आता है।
३) उन्हे स्वयं की आलोचना बिलकुल पसंद नहीं होती।
४) स्वयं की इच्छा के विरुद्ध या विपरीत कोई भी सलाह या बात उन्हे नापसंद होती हैं।
५) ऐसे व्यक्ति अपनी सोच के बंदी बन जाते हैं।
६) वे एकल मानसिकता से ग्रस्त हो जाते हैं।

वर्तमान संदर्भ में ऐसे व्यक्ति आये दिन भिन्न-भिन्न आयोजनों में अपनी उपस्थिति दर्ज करते रहते हैं। इस बात का वे पूरा खयाल रखते हैं कि उनकी छवि को कोई नुकसान नहीं पहुँचे। गीता (१६.११-१८) में भगवान श्रीकृष्ण ने भी विस्तार से ऐसे व्यक्तियों के विषय में कहा है जो आज के परिस्थिति से काफी मेल खाता है। उनकी बात पर ध्यानपूर्वक गौर करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा है – "उनका (मानव का) विश्वास है कि इन्द्रियों की तुष्टि ही मानव सभ्यता की मूल आवश्यकता है। वे लाखों इच्छाओं के जाल में बँधकर तथा काम और क्रोध में लीन होकर इन्द्रिय-तृप्ति के लिये अनेक ढंग से धन संग्रह करते हैं। आसुरी व्यक्ति सोचता है, आज मेरे पास इतना धन है, और अपनी योजनाओं से मैं और अधिक धन कमाऊँगा। वह मेरा शत्रु है और उसे मैंने मार दिया है। मेरे अन्य शत्रु भी मार दिये जायेंगे। मैं सभी वस्तुओं का स्वामी हूँ। मैं भोक्ता हूँ। मैं सिद्ध, शक्तिमान एवं सुखी हूँ। मैं सबसे धनी व्यक्ति हूँ और मेरे कुलीन संबंधी हैं। कोई अन्य मेरे समान शक्तिमान तथा सुखी नहीं है। मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और इस तरह आनंद मनाऊँगा। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति अज्ञानवश मोहग्रस्त रहते हैं। अपने को श्रेष्ठ मानने वाले तथा सदैव घमंड करने वाले सम्पत्ति तथा मिथ्या प्रतिष्ठा से मोहग्रस्त लोग किसी विधि-विधान का पालन न करते हुए कभी-कभी नाम मात्र के लिये बड़े गर्व के साथ यज्ञ करते हैं। मिथ्या अहंकार, बल, दर्प, काम और क्रोध से मोहित होकर आसुरी व्यक्ति अपने शरीर में तथा अन्यों के शरीर में स्थित भगवान से ईर्ष्या और वास्तविक धर्म की निंदा करने लगते हैं।"

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि बाहर से तो ऐसे व्यक्ति दूसरों को सुखी प्रतीत होते हैं, वास्तव में वे तनावग्रस्त रहते हैं। कभी तृप्त न होने वाली तृष्णा के ताप में वे तपते रहते हैं। अहंकार ऐसी ही दौड़ है, जिसमें जीतनेवाला अंततः हार जाता है। ऐसे इंसान को न तो अपनी भूल नजर आती है, न ही दूसरों की अच्छी सलाह। घमंड के बादलों से घिरे हुए इंसान को सूरज दिखाई नहीं देता। ऐसे व्यक्तियो के लिए ही तुलसीदासजी ने कहा है –

छुद्र नदी भरी चली उतराई। जस थोरे धन खल बौराई।

अर्थात वर्षा से भरकर नदी अपने को सागर समझने लगती हैं। वैसे ही जरा साधन आने पर मनुष्य अपना संतुलन खो बैठता है। स्वयं को महिमामंडित करने एवं अभिमान को आवश्यक खुराक देने के लिये नाना प्रकार के उपाय करते रहते हैं। व्यक्तित्व की महत्ता धूमिल हो जाती है, व्यक्ति केन्द्र में आ जाता है। चरित्र की जगह चित्र महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यक्ति की महत्ता इस बात से हटकर कि वह क्या है, इस पर टिक जाती है कि उसके पास क्या-क्या है। वह दूसरों से स्वयं को श्रेष्ठ समझने एवं दिखाने के उद्देश्य से नये-नये शौक पाल लेता है। ऐसे व्यक्तियों के लिये कहा जा सकता है –

इत्र से महकाना कोई बड़ी बात नही
मजा तो तब है जब किरदार से खूशबू आये।

ऐसे व्यक्तियो का समाज में लाभदायक योगदान सीमित रहता है। उनके उदाहरणों से समाज में विश्रृंखलता पनपती है। अन्य व्यक्ति भी उनके अनुकरण में लग जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जीवन मोर की तरह हो जाता है। उसका पंख दिखने में बहुत सुंदर होता है पर जीवन भर उन्हीं पंखों के भार से बोझिल रहता है एवं उँची उड़ान नहीं भर पाता।

अयोध्या से वापस आने पर माँ कौशल्या ने पूछा...

"रावण" को मार दिया?

भगवन श्रीराम ने सुन्दर जवाब दिया...

महाज्ञानी, महाप्रतापी, महाबलशाली, प्रखंड पंडित, महा शिवभक्त, चारों वेदो के ज्ञाता, शिव ताण्डव स्त्रोत्र के रचयिता लंकेश को मैने नहीं मारा,

उसे "मैं" ने मारा है।

देर-सवेर उन्हें समझ में आता है किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसी प्रकार के एक व्यक्ति ने "मैं" के अभिमान में अपना जीवन गुजार दिया। अंत में उसे अपनी भूल समझ में आई। तब वह कुछ नहीं कर सकता था। हाँ, पश्चाताप में दुनिया को संदेश देने के लिये उसने यह इच्छा जाहिर की कि उसके कब्र पर तख्त लगाकर यह लिख दिया जाय कि –

"मैं" अहम था
यह मेरा वहम था।

समाज में इस प्रकार की मानसिकता से समाज का व्यापक अहित होता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा था कि **अति सर्वत्र वर्जयेत**। किसी भी चीज की अति बुरी होती है। इस "मैं" के भाव से स्वयं को मुक्त करने से स्वयं उस अहंकारी व्यक्ति को सबसे ज्यादा लाभ होगा। कबीर दास जी की राय मानते हुए हम इस वहम को स्वयं से दूर ही रखें –

मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकलो भाग
कह कबीर कब लग रहै, रुई लपेटी आग

अहंकार बहुत बुरी वस्तु है, हो सके तो इससे निकल कर भाग जाओ। रूई मे लिपटी इस अग्नि – अहंकार – को मैं कब तक अपने पास रखूँ?

प्रश्न यह उठता है कि इस स्थिति से कैसे उबरा जाय? भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है (३.२७) :-

प्रकृतेः क्रियामाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः
अहंकार विमूढ़ात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते।।

वास्तव में सम्पूर्ण कर्म सब प्रकार से प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं। जिसका अन्तःकरण अहंकार से मोहित हो रहा है, ऐसा अज्ञानी 'मै कर्त्ता हूँ' ऐसा मानता है। इस प्रकार की धारणा तब होती है जब मनुष्य स्वयं को शरीर मानता है। कबीर दास जी ने कहा है – **जब मै था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाय**। यानि जब अहम भाव रहता है तो मनुष्य प्रभु की सत्ता से अलग हो जाता है। इस "मैं" को हटाने के लिए उसे अपने जीवन में प्रभु के सत्ता को स्वीकार करना होगा। भगवान को खोजने का या उसकी सत्ता को जानने का अत्यंत सरल रास्ता भी कबीर दास जी ने ही बताया है –

खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सब सांसो की सांस में।।

प्रभु के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। इसको मन समझने के लिये तैयार नहीं होता। मन को जब तक हम अपने नियंत्रण में नही रखेंगे, यह हमारे शत्रु का ही काम करेगा। जब मन के पहले 'न' लगा देते है तो नमन यानि नम्र हो जाते हैं एवं यदि मन के बाद में 'न' लगाते है तो हम 'मनन' करते है। यह 'न' द्योतक है – मन की सत्ता को अस्वीकार करना है। गीता में भी कहा गया है (६.६) –

वन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत।।

जिसने मन को जीत लिया, उसके लिये मन अधिक मित्र है, किन्तु जो ऐसा नहीं कर पाया उसके लिये मन सबसे बड़ा शत्रु बना रहेगा।

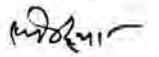

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

संस्कारों के प्रकाश से तिरोहित होंगी कुरीतियाँ!

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

स्नेही-सुधी समाजबंधु,

सर्वप्रथम अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार को भाईचारे और रंगों के परम पवित्र त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाये! परमपिता से प्रार्थना है कि बसन्तोत्सव आप सबके जीवन में आनंदों के रंग लेकर आये और सदैव विराजमान रहे!

होली को सामान्यतया हम एक आनन्दोत्सव के रूप में देखते हैं – प्रेम, आनंद और रंगों में सराबोर होने का त्यौहार। कृष्ण-राधा, सीता-राम, शिव-पार्वती की होली के अनेकानेक दृष्टांतों से हमारा साहित्याकाश सुशोभित है। तुलसी एवं सूर सहित अनेकों महाकवियों ने इस विषय पर महनीय रचनायें की हैं। रीतिकाल के अनन्य कवि पद्माकर का एक छंद द्रष्टव्य है –

फाग के भीर अभीरन तें गहि, गोविन्द लै गई भीतर गोरी,
भाय करी मन की पद्माकर, उपर नाय अबीर की झोरी।
हीन पितंबर कंमर तें, सु बिदा दई मोड़ि कपोलन रोरी,
नैन नचाई कह्यो मुस्काइ, लला! फिर आइयो खेलन होरी।।

तुलसी राम-सीता की होली का दृश्य यूँ प्रस्तुत करते हैं –

इन से बाल-सखा लिए रघुवर पिताम्बर तन धारी,
उन से सखिन्ह समेत जानकी ओढ़े नवल रंग सारी।
भूषणा ले अंग होरी खेलत,
अवधबिहारी अनुज ले संग होरी खेलत।।

और सूर के ब्रज की होली की तो बात ही निराली है –

बृज में हरि होरी मचाई।
राधा सैन दिए सखियन को झुंड-झुंड चलि धाई,
लपटि-झपटि के श्यामसुन्दर को बरबस पकड़ि मंगाई।
छिन लिए मुख मुरली पिताम्बर, कर से चुनरी ओढ़ाई,
बिन्दी भाल नयन बीच काजर, नकबेसर पहिराई।
लालजी को नारी बनाई, बृज में हरि होरी मचाई।।

होली के भाव और इसके सन्देशों का क्षितिज अत्यंत विशाल एवं विस्मीर्ण है। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका का दहन अनाचार एवं अत्याचार के पराभव का द्योतक है। भविष्य पुराण में ढोंढा नाम की राक्षसी का वर्णन मिलता है। जिसके अत्याचारों से लोग त्रस्त थे। फिर कई गाँवों के लोगों ने मिलकर उसे जला दिया। उसे जलाते समय जयकारा और अश्लील शोर किया गया और लोगों ने अग्नि की परिक्रमा की। आज भी अग्नि की परिक्रमा की जाती है और होलिका-दहन के समय शोर किया जाता है। भविष्य पुराण के अनुसार इससे राक्षसी दोषों का नाश होता है –

गीतैर्वाद्यैस्तथा नित्यै रात्रिः सा नीयते नरैः।
तमग्निं त्रिः परिक्रम्य शब्दैर्लिंगभगांगितैः।
तेन शब्देन सा पापी राक्षसी क्षयमाप्नुयात।।

होली को मेल-जोल और परस्पर प्रेम का पर्व मानते हैं। अपनी खुशियों में कुटुम्ब-पड़ोसी सहित सबों को सम्मिलित करना होली का भाव है, खासकर निर्धनों को।

हमारे धर्मग्रन्थों में 'आत्मवत सर्वभूतेषु' और 'बसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा दी गई है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन भी जरूरतमंद एवं संसाधनहीन लोगों की मदद हेतु हर स्तर से प्रयास का हामी है और अपने कार्यक्रमों के माध्यम से यथासम्भव प्रयास करता है। कोरोना-काल जैसी विपत्ति के समय में, 'अन्नपूर्णा रसोई' प्रकल्प इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

गांधीजी ने 'ट्रस्टीशिप' की बात कही थी। सम्पन्न लोगों के लिए उनका संदेश था कि सम्पति के आप मालिक नहीं 'ट्रस्टी' हैं और आम जन के कल्याण के लिए धन का सदुपयोग करना आपका दायित्व है। सम्मेलन इस अवधारणा का पूर्णरूपेण समर्थन करता है। वस्तुतः जनकल्याण में अर्पण ही संसाधनों का श्रेष्ठ उपयोग है। सभी समर्थ समाजबन्धुओं को स्वयं तो उसका पालन करना ही चाहिए, साथ ही अपने भावी पीढ़ी को भी परोपकार के संस्कार देने चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास मानस में लिखते हैं –

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।

संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास आज समाज के समक्ष दुष्कर समस्याओं में है। ईमानदारी, परिश्रम, धर्मानुकूल आचरण, बुजुर्गों का सम्मान, आदि जो मारवाड़ी समाज के विशिष्ट गुण हैं, उनका दिनानुदिन क्षरण चिंतनीय है। स्वयं के आचरण पर नियंत्रण और अपने युवक-युवतियों, किशोर-किशोरियों को संस्कारों के प्रति सजग-सचेत रखना आज समय की माँग है। सुसंस्कृत युवा पीढ़ी ही एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकती है और कुरीतियों पर अंकुश लगा सकती है। संस्कार वह प्रकाश है जिसके समक्ष कुरीतियों का अंधकार तिरोहित हो जाता है। संस्कारों की पवित्र अग्नि सभी दुराचरणों के समूल नाश में समर्थ है।

इस माह हम राजस्थान दिवस (३० मार्च) मना रहे हैं, पूरे सम्मेलन परिवार को इस पावन दिवस की हार्दिक बधाई! २३ मार्च को भारत के समाजवाद के पुरोधा, महान राजनेता, राष्ट्रचिंतक एवं भविष्यद्रष्टा डॉ. राम मनोहर लोहिया (२३ मार्च १९१०-१२ अक्तूबर १९६७) की जयन्ती है। राष्ट्र के प्रति इस महामानव के अवदान अवर्णनीय हैं। पूरे सम्मेलन परिवार की ओर से, उन्हें विनम्र-कृतज्ञ पुष्पांजलि अर्पित करते हुए, नमन करता हूँ!

पुनः होली की बधाइयों सहित...

जय समाज - जय राष्ट्र!

संस्कार-संस्कृति में ह्रास है सभी समस्याओं का मूल कारण : गोवर्धन गाड़ोदिया

"सामाजिक सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है तथा इस हेतु निरंतर एवं सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। संस्कार-संस्कृति का ह्रास आज हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या बन गई है। वैवाहिक कार्यक्रमों में दिखावा, मद्यपान, प्री-वेडिंग शूट, बुजुर्गों के प्रति घटता सम्मान, तलाक व आत्महत्याओं के बढ़ते मामले आदि के प्रति हमें समाज को जागरूक करना होगा। इन कुरीतियों का निवारण समाजहित में नितांत आवश्यक है।" ये उद्‌गार हैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** के जो उन्होंने गत २८ फरवरी २०२१ को सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। बैठक का आयोजन वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से कोलकाता एवं राँची से संयुक्त रूप से किया गया।

श्री गाड़ोदिया ने वर्तमान सत्र की कार्यकारिणी समिति की पहली बैठक में सबका स्वागत करते हुए आगामी विधानसभा चुनावों में सभी समाजबंधुओं से मतदान जरूर करने की अपील की।

वर्तमान सत्र में संगठन-विस्तार एवं अन्य गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु उन्होंने 'सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय अध्यक्ष' एवं 'सर्वाधिक सदस्यता-विस्तार' नामक दो पुरस्कारों की घोषणा भी की।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने बैठक में अच्छी उपस्थिति को हौसला बढ़ाने वाला बताते हुए कहा कि हाल के दिनों में सम्मेलन की सक्रियता बढ़ी है। सभी प्रदेशों के संगठन-विस्तार तथा कार्यकलापों पर संतोष व्यप्त करते हुए उन्होंने कहा कि समाज सुधार तथा समरसता पर हमें हमेशा सक्रिय रहना होगा।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री नंदलाल रुँगटा** ने कहा कि पूरे दक्षिण भारत में पैठ होने से अब सम्मेलन का स्वरूप राष्ट्रीय दिखने लगा है। जरूरत है समाज के अधिकाधिक लोगों को इससे जोड़कर, कार्यक्रमों को और गति प्रदान करने की।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** ने सम्मेलन की गतिविधियों एवं संगठन-विस्तार को उत्साहजनक बताया। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने समाज सुधार के साथ-साथ सेवाकार्य, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार सम्बंधी कार्यक्रमों को भी बढ़ावा देने की बात कही।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने समिति की पिछली बैठक (२७ अक्टूबर २०२०; वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से) का कार्यवृत प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। उन्होंने 'महामंत्री की रपट' प्रस्तुत की तथा सम्मेलन की वर्तमान एवं भावी कार्यकलापों की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यसूची के अनुसार राष्ट्रीय स्थायी समिति के गठन पर विचार-विमर्श हुआ और समिति के गठन का अधिकार राष्ट्रीय अध्यक्ष को दिया गया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री पवन कुमार गोयनका** ने बताया कि पहले के मुकाबले सम्मेलन की पहुँच अब और अधिक तथा बेहतर हुई है। लोगों में सम्मेलन के प्रति उत्सुकता है। उन्होंने संगठनात्मक दृष्टि से कमजोर प्रदेशों में आने वाले समय में सक्रियता के साथ कार्य करने पर जोर दिया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री अशोक जालान** ने सम्मेलन के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में आई गति हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष की सक्रियता को प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि उनकी ऊर्जा से प्रांतों में नयी स्फूर्ति आई है। प्रदेशों में संगठन-विस्तार सहित अन्य कार्यक्रमों का विस्तार जारी है।

बिहार सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष **श्री महेश जालान** ने बताया कि 'संगठन माह' के अन्तर्गत गत एक महीने में बिहार सम्मेलन द्वारा सघन संगठन-विस्तार एवं शाखाओं को मजबूती प्रदान करने का कार्य किया गया जिसका परिणाम अति उत्साहजनक रहा। 'अन्नपूर्णा रसोई' कार्यक्रम के अन्तर्गत हर शनिवार को प्रांत के ३९ शाखाओं द्वारा गरीबों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे हर हफ्ते राज्य के लगभग १५,००० लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

वरिष्ठ समाजसेवी **श्री जगदीश प्रसाद चौधरी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि समाज के आर्थिक-सामाजिक उन्नयन में मारवाड़ी सम्मेलन का योगदान उल्लेखनीय है। आज मारवाड़ी समाज सिर्फ आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रहा है। उन्होंने सांस्कृतिक समारोहों के माध्यम से समाज के लोगों को एकत्रित करने की बात कही।

राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण सर्वश्री भानीराम सुरेका, पवन कुमार सुरेका, डॉ. श्याम सुंदर हरलालका एवं विजय कुमार लोहिया तथा प्रादेशिक अध्यक्षों सर्वश्री ओमप्रकाश अग्रवाल (झारखंड), ओमप्रकाश खंडेलवाल (पूर्वोत्तर), पुरुषोत्तम सिंघानिया

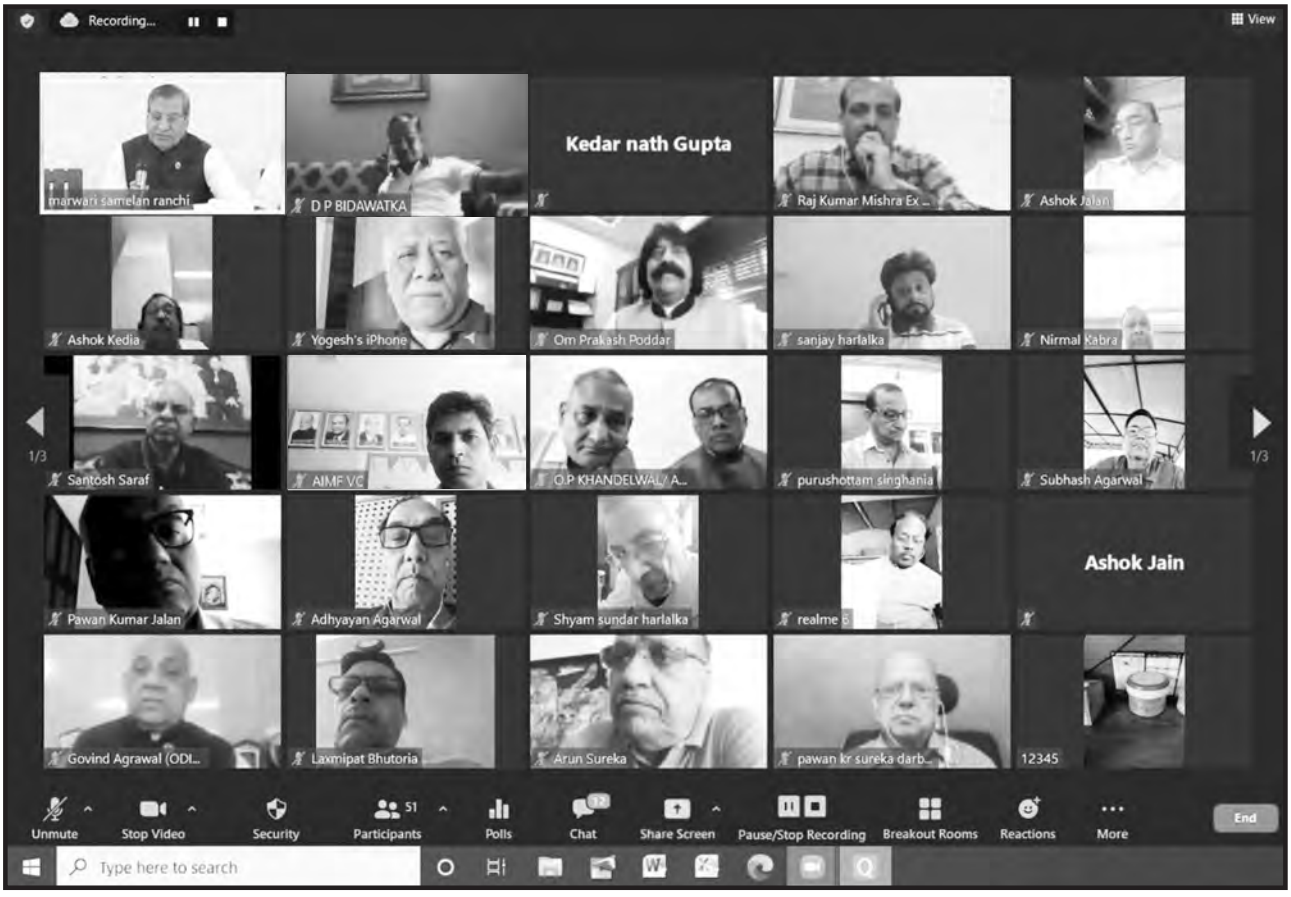

(छत्तीसगढ़), डॉ. सुभाष अग्रवाल (कर्नाटक), लक्ष्मीपत भूतोड़िया (दिल्ली), गोविन्द अग्रवाल (उत्कल), संतोष खेतान (उत्तराखंड), अशोक कुमार मूँधड़ा (तमिलनाडु) एवं नंदकिशोर अग्रवाल (प. बंग) ने अपने-अपने प्रदेशों में चल रहे कार्यक्रमों एवं विभिन्न गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

बैठक का संचालन श्री संजय हरलालका ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विनय सरावगी** ने समाजबंधुओं से जनगणना के समय अपनी मातृभाषा राजस्थानी बताने की अपील की। बैठक का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

बैठक में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्रीद्वय सर्वश्री गोपाल अग्रवाल एवं सुदेश अग्रवाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बसंत मित्तल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, सर्वश्री नंदलाल सिंघानिया, शिव कुमार लोहिया, कैलाशपति तोदी, दिनेश जैन, अनिल जाजोदिया, रमेश बूबना, निर्मल काबरा, राजकुमार केडिया, भागचंद पोद्दार, राजकुमार मिश्रा, रतनलाल बंका, जगदीश प्रसाद शर्मा, पवन कुमार जालान, विनोद तोदी, मधुसूदन सीकरिया, कमल नोपानी, नारायण प्रसाद डालमिया, राजकुमार तिवाड़ी, अशोक केडिया, ओमप्रकाश प्रणव, रंजीत जालान, अमर बंसल, योगेश तुलस्यान, गौरीशंकर अग्रवाल, पवन शर्मा, जगदीश गोलपुरिया, निर्मल कुमार झुनझुनवाला, श्रीमती सुषमा अग्रवाल एवं पुष्पा भुवालका सहित देशभर से सम्मेलन के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

समाचार सार

आईपीएस के लिए चुनी गयी जोरहाट की सिजल

जोरहाट की सिजल अग्रवाल हाल ही में घोषित संघ लोकसेवा आयोग (यूपीएससी) नतीजों में ११२वें रैंक के साथ सफलता हासिल कर आईपीएस के लिए चुनी गयी हैं।

बधाइयों-आशीर्वादों का प्रत्युत्तर देते हुए सिजल ने अपनी सफलता के लिए अपने माता-पिता एवं अभिभावकों की प्रेरणा और कठिन परिश्रम को पूरा श्रेय दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सिजल के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता है!

महाराष्ट्र सम्मेलन के अध्यक्ष पद का चुनाव

राज पुरोहित महाराष्ट्र सम्मेलन के नये अध्यक्ष निर्वाचित

समाज के बिना जीवन अधूरा : पवन गोयनका

सबको साथ लेकर करेंगे संगठन मजबूत : राज पुरोहित

गत २१ फरवरी २०२१ को मुम्बई के वानखेड़े स्टेडियम स्थित गरवारे क्लब में महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की एक विशेष सर्वसाधारण सभा का आयोजन कर महाराष्ट्र सम्मेलन के अध्यक्ष का चुनाव किया गया।

सभा को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं महाराष्ट्र के प्रभारी **श्री पवन कुमार गोयनका** ने सम्मेलन की पृष्ठभूमि, उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और एक-दूसरे के सहयोग से ही हम एक अच्छे समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। वस्तुतः समाज के बिना जीवन अधूरा है।

सभा की अध्यक्षता महाराष्ट्र सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री किशोर जैन ने किया। उन्होंने सभी उपस्थितों का स्वागत किया। निर्वाचन पदाधिकारी **श्री जयप्रकाश मूँधड़ा** (पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष, महाराष्ट्र सम्मेलन) ने निर्वाचन प्रक्रिया के विषय में बताया और फिर महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद हेतु **श्री राज के. पुरोहित** के सर्वसम्मत निर्वाचन की घोषणा की।

निर्वाचन की घोषणा के साथ ही बधाइयों का ताँता लग गया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री **श्री दिलीप गांधी**, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री पवन कुमार गोयनका**, राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री बसंत कुमार मित्तल**, राजनैतिक विश्लेषक **श्री निरंजन परिहार**, समाजसेवी **श्री उम्मेद सिंह परिहार**, विधि-विशेषज्ञ श्री एम.डी. माली, समाजसेवी **श्री सुशील व्यास**, **श्री सुशील रूबिया**, प्रादेशिक पदाधिकारीगण **सर्वश्री किशोर जैन, वीरेन्द्र धोका, निकेश गुप्ता, गोविन्द पारीक**, युवा मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री सुनील खाम्बिया, श्री राम किशोर**, नगरसेवक **श्री आकाश राजपुरोहित** सहित विभिन्न स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने श्री पुरोहित की बधाइयाँ दी।

अपने सम्बोधन में निर्विरोध निर्वाचन हेतु सभी का आभार व्यक्त करते हुए श्री राज के. पुरोहित ने कहा कि समाज के व्यापक हित में, सबको साथ लेकर सम्मेलन के संगठन को मजबूत करना उनकी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही प्रांतीय कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा जो भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करने के बाद उनके क्रियान्वत की भूमिका बनायेगी। श्री पुरोहित ने कहा कि समाज ने उन पर विश्वास कर यह जिम्मेवारी दी है और इस दायित्व का वहन वे अत्यंत उत्साह के साथ करेंगे।

महाराष्ट्र सम्मेलन की चिंतन बैठक

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की चिंतन बैठक १४ मार्च २०२१ को पुणे में आयोजित की गई। बैठक में संगठन-विस्तार सहित सम्मेलन से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। स्थानीय समाजबंधुओं द्वारा प्रादेशिक अध्यक्ष निर्वाचित होने पर श्री राज के. पुरोहित का भव्य स्वागत-अभिनंदन किया गया।

कुछ तो फूल खिलाये हमने, और कुछ फूल खिलाने हैं!

– सन्तोष सराफ
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सर्वप्रथम अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों-सदस्यों, मातृशक्ति एवं युवाशक्ति को रंग-प्रेम और उत्साह के पर्व होली की हार्दिक बधाइयाँ एवं मंगलकामनायें!

अत्यंत हर्ष का विषय है कि सम्मेलन का २६वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन राँची में गरिमामयी तरीके से सम्पन्न हुआ। पदभारग्रहण के बाद से ही नये अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद जी गाड़ोदिया ने जिस सक्रियता एवं सुनियोजित रूप से कार्य करना प्रारम्भ किया है, वह सराहनीय है। सबसे सदैव संवाद बनाए रखना और सबको साथ लेकर चलना श्री गाड़ोदिया के नेतृत्व-कुशलता की विशेषताएँ हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास हैं कि श्री गाड़ोदिया का अध्यक्षीय कार्यकाल सम्मेलन के सफलतम वर्षों में होगा और सम्मेलन दिनानुदिन नयी ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगा।

राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण सर्वश्री भानीराम सुरेका, पवन कुमार गोयनका, पवन कुमार सुरेका, अशोक कुमार जालान, डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका एवं विजय कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल एवं श्री सुदेश अग्रवाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बसंत कुमार मित्तल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका को उनके मनोनयन पर हार्दिक बधाइयाँ। आप सभी सम्मेलन के अनुभवी एवं समर्पित स्तम्भ हैं और आपका योगदान सम्मेलन के लक्ष्यों को पूरा करने में सहयोगी होगा, इसका मुझे विश्वास है। पदाधिकारियों की टीम बहुत अच्छी है। साथ ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति भी, सर्वसमावेशी एवं प्रतिनिधिक बन पड़ी है।

गत कुछ वर्षों में सम्मेलन के संगठन में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। गत सत्र में दक्षिण भारत के सभी प्रांतों में प्रादेशिक शाखाओं की स्थापना/पुनर्गठन हुआ और सुचारु रूप से कार्य प्रारम्भ हुआ। गत सत्र में सदस्य-संख्या में भी लगभग सौ प्रतिशत की वृद्धि हुई! वर्तमान सत्र के प्रारम्भ में ही महाराष्ट्र में प्रादेशिक शाखा का चुनाव हुआ और सक्रियता से कार्य आरम्भ किया गया है। ये सभी अत्यंत उत्साहवर्धक हैं। तथापि, अभी बहुत कुछ करने को है। हमारा तात्कालिक लक्ष्य है कि देश के हर जिले में जो हमारी जिला-स्तर की शाखा है, उसका अपना कार्यालय हो, बैंक अकांउट हो और सक्रियता हो, महीने में कम से कम एक बैठक होती हो। इस स्तर से और आगे बढ़ना – हर शाखा में इनका प्रावधान, हमारा दीर्घकालिक लक्ष्य हो।

यह भी वांछनीय है कि सम्मेलन के संगठन में राष्ट्र-स्तर पर एकरूपता हो। खासकर संविधान आदि जो विधिक विषय हैं, उनमें एकरूपता जरूरी है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की मूल भूमिका एक विचार-मंच की रही है। अपने स्थापना-काल के ही सम्मेलन ने अनेक सामाजिक आंदलनों को नेतृत्व प्रदान किया है और समाज सुधार के क्षेत्र में महनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। गत कुछ वर्षों में सम्मेलन ने सेवा के कुछ महत्वपूर्ण प्रकल्प भी हाथ में लिए हैं। मेधावी तथा जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु सहयोग सम्मेलन के प्रमुख सेवाकार्यों में हैं। रोजगार सहायता के प्रकल्प के अंतर्गत भी अच्छा कार्य हुआ है। कोरोना-काल में अन्नपूर्णा रसोई, मास्क-वितरण सहित विभिन्न जनहितकारी कार्यक्रम चलाए गए। मेरा मानना है कि सम्मेलन को अपने सेवा-प्रकल्पों पर और जोर देना चाहिए। इसका एक ज्वलंत उदाहरण है चिकित्सा। यह सर्वमान्य है कि असाध्य रोगों से ग्रसित होने की स्थिति में स्तरीय चिकित्सा की व्यवस्था कर पाना आज आमजन तो क्या मध्यवर्ग के लिए भी अत्यंत कठिन है। ऐसे में एक चिकित्सा सहायता कोष की स्थापना सम्मेलन का एक सटीक एवं सामयिक कदम होगा।

आप सबको एक बार पुनः होली की मंगलकामनायें निवेदित करते हुए, अपनी कामनायें कवि मदन मोहन जी के शब्दों में व्यक्त करना चाहूँगा :

दुर्भाव हटे, कटुता सिमटे, हो भातृभाव का बस प्रचार,
अबकी होली में हो जाये, कुछ ऐसा अद्‌भुत चमत्कार!

जय समाज - जय राष्ट्र!

सम्मेलन की नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति

पदाधिकारीगण

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया (राँची), राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री भानीराम सुरेका (कोलकाता), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री श्याम सुन्दर हरलालका (असम), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पवन कुमार सुरेका (बिहार), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री अशोक कुमार जालान (उत्कल), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री विजय कुमार लोहिया (चेन्नै), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री संजय हरलालका (कोलकाता), राष्ट्रीय महामंत्री
श्री गोपाल अग्रवाल (कोलकाता), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री सुदेश कुमार अग्रवाल (कोलकाता), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री बसंत कुमार मित्तल (राँची), राष्ट्रीय संगठन मंत्री
श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका (कोलकाता), राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

पदेन सदस्य

श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री प्रह्लाद राय अगरवाला (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री शिव कुमार लोहिया (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री
श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री
श्री नंदलाल रुँगटा (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री रामअवतार पोद्दार (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री संतोष सराफ (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री रतनलाल शाह (कोलकाता), पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री

सदस्यगण

श्री आनंद कुमार अग्रवाल (कोलकाता)
श्री अरुण सुरेका (कोलकाता)
श्री अशोक कुमार गुप्ता (हावड़ा)
श्री अशोक कुमार तोदी (कोलकाता)
श्री आत्माराम सोंथलिया (कोलकाता)
श्री अतुल चुड़ीवाल (कोलकाता)
श्री बाबूलाल धनानिया (कोलकाता)
श्री बनवारी लाल शर्मा 'सोती' (कोलकाता)
श्री भागचंद पोद्दार (राँची)
श्री विनय सरावगी (राँची)
श्री विनोद कुमार तोदी (पटना)
श्री विश्वनाथ भुवालका (कोलकाता)
श्री दीपक जालान (कोलकाता)
श्री देव किशन मोहता (हावड़ा)
श्री दीनदयाल गुप्त (कोलकाता)
श्री दिनेश कुमार जैन (कोलकाता)
श्री हरि प्रसाद बुधिया (कोलकाता)
श्री जगदीश प्रसाद चौधरी (कोलकाता)
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा (चेन्नई)
डॉ. जुगल किशोर सर्राफ (कोलकाता)
श्री जुगल किशोर जाजोदिया (कोलकाता)
श्री कैलाश पति तोदी (हावड़ा)
श्री मधुसूदन सीकरिया (गुवाहाटी)
श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल (कोलकाता)
श्री नंदलाल सिंघानिया (कोलकाता)
श्री नारायण प्रसाद डालमिया (कोलकाता)
श्री पवन कुमार जालान (कोलकाता)
श्री राज कुमार केडिया (राँची)
श्री राज कुमार मिश्रा (दिल्ली)
श्री रमेश कुमार बूबना (कोलकाता)
श्री रतन लाल बंका (राँची)
श्री रविन्द्र चमड़िया (कोलकाता)
श्री सजन कुमार बंसल (कोलकाता)
श्री सज्जन भजनका (कोलकाता)
श्री संदीप फोगला (कोलकाता)
श्री श्रीकुमार बाँगड़ (कोलकाता)
श्री सुशील कुमार अग्रवाल (धनानिया)
श्रीमती सुषमा अग्रवाल (पटना)
श्री विवेक गुप्त (कोलकाता)

स्थायी विशिष्ट आमंत्रित

श्री अनिल कुमार जाजोदिया (वाराणसी)
श्री अशोक कुमार जैन (गिरिडीह)
श्री बनवारीलाल मित्तल (कोलकाता)
श्री भरत कुमार जालान (कोलकाता)
श्री ब्रह्मानंद अग्रवाला (कोलकाता)
श्री धरम चंद जैन 'रारा' (राँची)
श्री गौरी शंकर अग्रवाल (बलांगीर)
श्री गोविन्द सारदा (कोलकाता)
श्री ज्ञान प्रकाश जालान (राँची)
श्री जगदीश गोलपुरिया (बरगढ़)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री कमल कुमार दुग्गड़ (कोलकाता)
श्री कमल नोपानी (पटना)
श्री केदार नाथ गुप्ता (कोलकाता)
श्री किशन गोपाल मोहता (कोलकाता)
श्री किशन लाल चौधरी (विशाखापतनम)
श्रीमती ममता बिनानी (कोलकाता)
श्री मनीश डोकानिया (कोलकाता)
श्री मुरारी लाल खेतान (कोलकाता)
श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला (पटना)
श्री निर्मल कुमार कावरा (जमशेदपुर)
श्री ओम प्रकाश पोद्दार (बेंगलुरु)
डॉ. ओम प्रकाश प्रणव (राँची)
श्री प्रेमचंद सुरेलिया (कोलकाता)
श्रीमती पुष्पा भुवालका (राँची)
श्री राज कुमार तिवाड़ी (गुवाहाटी)
श्री रमेश कुमार सरावगी (कोलकाता)
श्री रंजीत कुमार जालान (हरिद्वार)
श्री संदीप कुमार सिंघल (सूरत)
श्री शिव कुमार अग्रवाल (कोचीन)
श्री उमेश साह (जमशेदपुर)

पदेन सदस्य

श्री चांदमल अग्रवाल (विशाखापतनम)
श्री विजय कुमार अग्रवाल (विशाखापतनम)
श्री महेश जालान (पटना)
श्री योगेश तुलसीयन (पटना)
श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया (रायपुर)
श्री अमर बंसल (रायपुर)
श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया (दिल्ली)
श्री बसंत पोद्दार (दिल्ली)
श्री गोकुल चंद बजाज (सूरत)
श्री राहुल अग्रवाल (सूरत)
श्रीमती शारदा लाखोटिया (कोलकाता)
श्री उमेश गर्ग (सिलिगुड़ी)
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (राँची)
श्री पवन कुमार शर्मा (राँची)
डॉ. सुभाष अग्रवाल (बेंगलुरु)
श्री रमाकांत सराफ (बेंगलुरु)
श्री नंद किशोर अग्रवाल (कोलकाता)
श्री शिव कुमार अग्रवाल (कोलकाता)
श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल (गुवाहाटी)
श्री अशोक कुमार अग्रवाल (गुवाहाटी)
श्री अशोक मुंधड़ा (चेन्नै)
श्री अशोक केडिया (चेन्नै)
श्रीमती रेखा लाखोटिया (दुर्गापुर)
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)
श्री रामपाल अट्टल (हैदराबाद)
श्री गोविन्द अग्रवाल (झारसुगुडा)
श्री जयदयाल अग्रवाल (सम्बलपुर)
श्री उमाशंकर अग्रवाल (वाराणसी)
श्री ललित मोहन अग्रवाल (वाराणसी)
श्री संतोष खेतान (हरिद्वार)
श्री संजय जाजोदिया (हरिद्वार)
श्री श्याम सुंदर अग्रवाल (कोचीन)
श्री दीपक कुमार लाखोटिया (कोचीन)
श्री अमित अग्रवाला (गुवाहाटी)

सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य

अन्नपूर्णा रसोई प्रकल्प के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

फरवरी २०२१ की झलकियाँ

१ फरवरी – कोलकाता कार्पोरेशन, एस.एन. बनर्जी रोड

२ फरवरी – गिरीश घोष रोड, बजरंगबली, हावड़ा

६ फरवरी – श्रीभूमि पोस्ट ऑफिस, लेक टाउन

९ फरवरी – तारासुन्दरी पार्क, मालापाड़ा

१४ फरवरी – ईस्ट सपुइ पाड़ा, बेलूड़, हावड़ा

२६ फरवरी – साउथ टेंगरा रोड

राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन एवं पदस्थापन समारोह

सामाजिक कुरीतियों को जड़ से खत्म करना होगा : गाड़ोदिया
'नर सेवा नारायण सेवा' है मारवाड़ी समाज का मूलमंत्र : सांसद संजय सेठ

"अपने समय, मन एवं धन को सेवाकार्यों में समर्पित करना मारवाड़ियों की परम्परा रही है और यही हम सबका दायित्व होना चाहिए। हमें समाज को जागरूक करना होगा और समाज-सुधार के साथ-साथ सेवाकार्य, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार को बढ़ावा देना होगा। समाज की कुरीतियों को जड़ से खत्म करने के लिए अभियान चलाना होगा।" ये उद्‌गार सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने गत ७ मार्च २०२१ को महाराजा अग्रसेन भवन, राँची में आयोजित राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन एवं पदस्थापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किए।

दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्‌घाटन करते श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया; साथ में परिलक्षित हैं सांसद श्री संजय सेठ, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री रविशंकर शर्मा आदि।

समारोह के विशिष्ट अतिथि सांसद **श्री संजय सेठ** ने कहा कि मारवाड़ी समाज देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तथा पूरे देश में 'नर सेवा नारायण सेवा' के मंत्र के साथ समाजहित में सेवाकार्य करता हैं।

इस अवसर पर झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री ओमप्रकाश अग्रवाल** ने कहा कि हमें समाज के आखिरी पायदान तक पहुँचने की नई कार्ययोजना बनाने की जरूरत है। डिप्टी मेयर **श्री संजीव विजयवर्गीय** ने मारवाड़ी समाज के सभी वर्गों की गणना कराने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें समाज सुधार के साथ-साथ राजनैतिक चेतना एवं सक्रियता का भी ध्यान रखना चाहिए।

समारोह में राँची जिला सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री रवि शंकर शर्मा** ने निर्वाचित अध्यक्ष **श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल** को पदभार सौंपा। **श्री ललित पोद्दार** राँची जिला सम्मेलन के मंत्री मनोनीत हुए।

समारोह में सर्वश्री विनय सरावगी, भागचंद पोद्दार, राजकुमार केडिया, ओमप्रकाश प्रणव, उम्मेद मल जैन, संजय सर्राफ, अरूण बुधिया, रतन मोर, पवन कुमार पोद्दार, प्रदीप राजगढ़िया, शिवशंकर साबू, अनिल अग्रवाल, सुनील केडिया, नारायण विजयवर्गीय, मनीष लोधा, आनंद जालान, नरेश बंका, अरूण केजरीवाल, मनजीत जाजोदिया, ज्योति बजाज, प्रेम कटारूका, किशोर मंत्री, निरंजन शर्मा, कमल खेतावत, अशोक पोद्दार, ज्योति अग्रवाल सहित समाज के पुरुष-महिलायें अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक जालान का छत्तीसगढ़ दौरा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं छत्तीसगढ़ के प्रभारी **श्री अशोक जालान** ने गत १४ फरवरी २०२१ को छत्तीसगढ़ प्रान्त का संगठनात्मक दौरा किया।

श्री जालान के रायपुर आगमन पर छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया**, महामंत्री **श्री अमर बंसल** एवं अन्य पदाधिकारियों-सदस्यों ने उनका स्वागत किया और एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सम्मेलन से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ।

बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री अशोक जालान ने सम्मेलन की हालिया गतिविधियों पर प्रकाश डाला और समाज के समक्ष समस्याओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि संगठन को मजबूत कर, समाज के अधिकाधिक लोगों को सम्मेलन से जोड़कर, आपसी समन्वय से हम समाजहित के सत्कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं और सामाजिक समस्याओं का निदान भी कर सकते हैं।

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया ने छत्तीसगढ़ सम्मेलन की गतिविधियों एवं भावी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ सम्मेलन द्वारा आजीवन सदस्यों को सदस्यता-कार्ड दिए जा रहे हैं।

कोविड-सम्बंधी निर्देशों का पूरी तरह पालन करते हुए आयोजित इस बैठक में छत्तीसगढ़ राइस मिल असोशिएशन के अध्यक्ष श्री योगेश अग्रवाल, सर्वश्री सुरेश चौधरी, सुनील लाठ, गोपाल अग्रवाल, सी.ए. महेश बिड़का, नारायण भुषाणिया, प्रवीण सिंघानिया, सूरज प्रकाश राठी सहित समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

उच्च शिक्षा कोष

समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल

छात्र/छात्राएँ नि:शुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : *चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL™
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by IS 1786:2008
Lic.No.-CM/L 5800021706
Approved by IS 2830:2012
Lic.No.-CM/L 5800007712

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
GARODIA
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय लोहिया का कर्नाटक दौरा

मारवाड़ी एकजुट होकर आगे बढ़े-बढ़ायें : विजय लोहिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं कर्नाटक प्रांत के प्रभारी **श्री विजय कुमार लोहिया** ने गत १९ फरवरी २०२१ को कर्नाटक का संगठनात्मक दौरा किया। बेंगलुरु में उन्होंने कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **डॉ. सुभाष अग्रवाल** एवं अन्य प्रादेशिक/स्थानीय पदाधिकारियों के साथ वैठक की जिसमें सम्मेलन के संगठनात्मक विस्तार, कार्यक्रमों एवं भावी रणनीतियों आदि के विषय में विस्तृत विचार-विमर्श हुआ।

बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री लोहिया ने केन्द्रीय सम्मेलन द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में बताया और सभी से इन कार्यक्रमों से जुड़ने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि समाज के समक्ष समय-समय पर समस्याएँ आती रहती हैं किन्तु ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका हम सामना न कर सकें। लेकिन इसके लिए एकजुट होकर, साथ जाकर, आपसी विचार-विमर्श और सबके समन्वय से रणनीति बनाकर कार्य करना होगा। तभी हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पायेंगे।

कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल ने अपने सम्बोधन में संगठन-विस्तार की

संगठन की मजबूती बहुत जरूरी : सुभाष अग्रवाल

श्री विजय लोहिया (शॉल ओढ़े हुए) का स्वागत करते डॉ. सुभाष अग्रवाल एवं अन्य।

आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के हर तबके से अधिक से अधिक लोगों को सम्मेलन के साथ जोड़ना आज समाज की माँग है। धन्यवाद-ज्ञापन बेंगलुरु जिला शाखा के मंत्री **श्री शिव कुमार टेकड़ीवाल** ने किया।

बैठक में कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री ओ.पी. पोद्दार, श्री रमेश भाउवाला, बेंगलुरु जिला शाखा के अध्यक्ष श्री अरुण खेमका, सर्वश्री अरविंद सलामपुरिया, सुरेश जालान, नीरज पोद्दार, संजय चौधरी, संजय कायल, रितेश भाउवाला आदि उपस्थित थे।

समाचार सार

निशा ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज कराया नाम

तिनसुकिया की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार निशा नंदिनी भरतीया ने सबसे अधिक सामाजिक कविताओं का रिकार्ड बनाकर अपना नाम इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड दर्ज कराया है। उनकी अब तक ५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें १८ काव्य संग्रह हैं। उन्होंने ८६० सामाजिक कविताएँ लिखी हैं। उनकी सभी रचनाएँ प्रेरणापरक व सकारात्मकता प्रदान करने वाली हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन निशा के सुदीर्घ स्वस्थ, प्रसन्न एवं सक्रिय साहित्यिक जीवन की मंगलकामना करता है!

सुजानगढ़ की बेटी डॉ. वाजिदा तबस्सुम बनेगी अमेरिका की यूनिवर्सिटी में डीन

अमेरिका में न्यूरो मस्कूलर व स्केलेटल स्पेशलिस्ट सुजानगढ़ की बेटी डॉ. वाजिदा तबस्सुम अब अमेरिकन यूनिवर्सिटी की डीन बनेगी। कोलकाता प्रवासी व सुजानगढ़ निवासी इंजीनियर मोहम्मद ईंसाक तगाला की बेटी वाजिदा ने अमेरिका में ब्रिजपोर्ट व यूक्रोन कनेक्टिकटविश्वविद्यालय से एमएस, न्यूरोलॉजी व रेडियोलॉजी में पीएचडी किया। साथ ही सभी परीक्षाओं में गोल्ड मेडलिस्ट रहने का गौरव प्राप्त किया है। डॉ. वाजिदा की शानदार अकादमिक उपलब्धि व उच्च बौद्धिक स्तर को देखते हुए यूनिवर्सिटी ने उन्हें डीन्स की सूची में शामिल किया है।

उल्लेखनीय है कि वाजिदा को विदेश में पढ़ाने का निर्णय उनके परिवार ने महाकवि कन्हैया लाल सेठिया के कहने पर लिया था। वाजिदा का परिवार महाकवि को अपनी उन्नति का प्रेरणास्रोत मानता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन वाजिदा के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता है!

होली में उपाधियों का

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
सीताराम शर्मा	मार्गदर्शक
डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया	अध्यात्म की ओर
प्रह्लाद राय अगरवाला	सकारात्मक सोच
गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया	बुलंद इरादा
पवन कुमार गोयनका	कर्त्तव्यनिष्ठ
अशोक कुमार जालान	काम बोलता है
विजय कुमार लोहिया	उत्तरदायित्व
गोपाल अग्रवाल	भाई साहब
बसंत कुमार मित्तल	हरफनमौला
रतनलाल शाह	राजस्थानी भाषा
श्रीगोपाल झुनझुनवाला	भगवा झंडा
आत्माराम सोंथलिया	अर्थ बिना सब व्यर्थ
विवेक गुप्त	नई राह
दिनेश कुमार जैन	पास भी, दूर भी
पवन कुमार जालान	दूसरी पीढ़ी
जगदीश प्रसाद चौधरी	समाजसेवा
शारदा लाखोटिया	महिला उत्थान
अमित अगरवाला	युवा पहचान
चांदमल अग्रवाल	बहुत कुछ करना है
रमेश कुमार बंग	चेयरमैन
महेश जालान	कर्मवीर
ओमप्रकाश अग्रवाल	स्वान्तः सुखाय
ओमप्रकाश खंडेलवाल	नया जोश
नंदकिशोर अग्रवाल	करके दिखाऊँगा
लक्ष्मीपत भूतोड़िया	दिल्ली का झंडा
गोविंद अग्रवाल	जय जगन्नाथ
संतोष खेतान	देखता हूँ
गोकुल चंद बजाज	साथी हाथ बढ़ाना
पुरुषोत्तम सिंघानिया	सहज-सरल
उमाशंकर अग्रवाल	समय का तकाजा
अशोक कुमार मूँधड़ा	अधूरे सपने
डॉ. सुभाष अग्रवाल	उदीयमान

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
नंदलाल रुँगटा	अजातशत्रु
रामअवतार पोद्दार	प्रवीण
संतोष सराफ	सफल पारी
भानीराम सुरेका	अभी तो मैं जवान
पवन कुमार सुरेका	मृदु मुस्कान
डॉ. श्याम सुंदर हरलालका	समाज की चिंता
संजय हरलालका	कलम का सिपाही
सुदेश कुमार अग्रवाल	नई पौध
दामोदर प्रसाद विदावतका	कोई चिंता नहीं
शिव कुमार लोहिया	कर्मण्येवाधिकारस्ते...
डॉ. जुगल किशोर सर्राफ	एम्बासडर
नंदलाल सिंघानिया	पैनलिस्ट
कैलाशपति तोदी	रिजर्व फोर्स
आनंद कुमार अग्रवाल	हरदिल अजीज
प्रह्लाद राय गोयनका	जोश की कमी नहीं
ओमप्रकाश अग्रवाल	डायरेक्टरी
रेखा लाखोटिया	नारीशक्ति
उमेश गर्ग	बढ़ते कदम
विजय कुमार अग्रवाल	कदम-कदम बढ़ाये जा
रामपाल अट्टल	हैदराबादी बिरयानी
योगेश तुलस्यान	आगे बढ़ना है
पवन शर्मा	नया उत्साह
अशोक कुमार अग्रवाल	हिज मास्टर्स वायस
शिव कुमार अग्रवाल	मुझे मालूम नहीं
बसंत पोद्दार	मामा के पदचिह्नों पर
जयदयाल अग्रवाल	सिपाहसालार
संजय जाजोदिया	पर्दे के पीछे
राहुल अग्रवाल	वहुत कुछ करना है
अमर बंसल	युवा तुर्क
ललित मोहन अग्रवाल	अदृश्य
अशोक केडिया	कोशिश जारी है
रमाकांत सराफ	लगा हुआ हूँ

मुक्तहस्त वितरण

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
श्याम सुंदर अग्रवाल	नेकनीयत
राजकुमार पुरोहित	करके दिखाना है
अशोक कुमार गुप्ता	सिफारिश
अतुल चुड़िवाल	हमारी संस्कृति
बनवारीलाल शर्मा 'सोती'	हितचिंतक
विनय सरावगी	कर्मठ
विश्वनाथ भुवालका	साल्ट लेक संसद
देव किशन मोहता	धीर-गम्भीर
जगदीश प्रसाद शर्मा	सुहृद
मधुसूदन सीकरिया	लम्बी पारी
नारायण प्रसाद डालमिया	मै साथ हूँ
राजकुमार मिश्रा	हसमुख
रतनलाल बंका	कवि हृदय
सजन कुमार बंसल	एकल अभियान
संदीप फोगला	शिक्षा पर जोर
सुशील कुमार अग्रवाल धनानिया	रायल
अनिल कुमार जाजोदिया	लाइफकोच
ब्रह्मानंद अगरवाला	आल इज वेल
गौरीशंकर अग्रवाल	एवर रेडी
ज्ञान प्रकाश जालान	जय श्रीराम
जोधराज लड्ढा	रामजी की माया
कमल नोपानी	आगे बढ़ना है
किशन गोपाल मोहता	हितैषी
ममता बिनानी	एक्सक्लूसिव
मुरारि लाल खैतान	जैंटलमैन
निर्मल कुमार कावरा	आपणी भासा
डॉ. ओमप्रकाश प्रणव	नीतिकार
पुष्पा भुवालका	सफल नेत्री
रमेश कुमार सरावगी	डायनेमिक
संदीप कुमार सिंघल	प्रयासरत
उमेश शाह	संगठनकर्ता
भरत जालान	सॉफ्ट स्किल

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
दीपक लाखोटिया	निभा रहा हूँ
अरुण कुमार सुरेका	टापर
अशोक कुमार तोदी	सहयोगी
बाबूलाल धनानिया	उदासीन
भागचंद पोद्दार	जीना इसी का नाम है
बिनोद तोदी	स्पष्टवक्ता
दीपक जालान	विशिष्ट लिंक
दीनदयाल गुप्त	दिल के साफ
जुगल किशोर जाजोदिया	सबके साथ
महावीर प्रसाद अग्रवाल	अतिथि देवो भव
राजकुमार केड़िया	कल्पना के संसार में
रमेश कुमार बूबना	चमकता सितारा
रवीन्द्र चमड़िया	सेक्टर फाइव
सज्जन भजनका	सेन्चूरियन
श्रीकुमार बाँगड़	योगदान
सुषमा अग्रवाल	चुम्बकीय आकर्षण
अशोक कुमार जैन	भद्रमानुष
धर्मचंद जैन 'रारा'	धर्म की राह पर
गोविन्द सारडा	हितैषी
जगदीश गोलपुरिया	युवा जोश
कमल कुमार दुग्गड़	बात का धनी
केदार नाथ गुप्ता	प्रेम पुजारी
किशन लाल चौधरी	जानकार
मनीश डोकानिया	हसमुख
निर्मल कुमार झुनझुनवाला	यथा नाम तथा गुण
ओमप्रकाश पोद्दार	ठोस विचार
प्रेमचंद सुरेलिया	जानकार
राजकुमार तिवाड़ी	आगे की सोच
रंजीत कुमार जालान	समय का अभाव
शिव कुमार अग्रवाल	आल इज वेल
हरिप्रसाद बुधिया	एवरग्रीन

सब मंगल हो होली में!

झारखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ

३१ जनवरी २०२१ को मधुपुर में सदस्यों के साथ बैठक की गई, वहाँ जल्द ही शाखा स्थापित करने पर विचार हुआ। इसी दिन देवघर जिला मारवाड़ी सम्मेलन के साथ बैठक की गई।

१ फरवरी २०२१ को गिरिडीह जिला मारवाड़ी सम्मेलन एवं बेरमो फुसरो शाखा मारवाड़ी सम्मेलन के साथ बैठक की गई।

देवघर, गिरिडीह, बेरमो फुसरो शाखाओं को कोविड-काल में उत्कृष्ट सेवाकार्यों हेतु 'कोविड वारियर सम्मान' से नवाजा गया।

६ फरवरी २०२१ को प्रांत की त्रैमासिक पत्रिका 'नई दिशा' के अंक ३ के ई-पत्रिका का अनावरण किया गया।

७ फरवरी २०२१ को पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत घाटशिला शाखा की स्थापना हुई और पदाधिकारियों का शपथग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ।

१५ फरवरी २०२१ को देवघर जिले के समाज की एक बच्ची को उच्च शिक्षा हेतु रु. ४७,०००/- का सहयोग दिया गया।

२० फरवरी २०२१ को पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा एक स्थानीय समाजबंधु को चिकित्सा सहयोग के रूप में २० हजार रुपये प्रदान किए गए।

२१ फरवरी को राँची जिला सम्मेलन के अध्यक्ष पद हेतु चुनाव हुआ। निर्वाचित अध्यक्ष श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया एवं प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने निर्वाचन प्रमाणपत्र प्रदान किया।

फरवरी माह तक प्रान्त में ३०४ नये आजीवन सदस्य एवं ६ विशिष्ट संरक्षक सदस्य बनाये गए।

स्वास्थ्य ही धन है

परम पवित्र तुलसी के औषधीय उपयोग

तुलसी का पौधा परम पवित्र है तथा इसका औषधीय महत्त्व भी बहुत है। यह स्वाद में कड़वी होती है तथा उष्ण गुण वाली होती है। इसका सेवन करने से सर्दी, शोध, कृमि आदि नष्ट होते है। आयुर्वेद के अनुसार यह हृदय रोगों के लिए हितकारिणी है तथा खाँसी, विष विकार एवं पसली की पीड़ा को दूर करती है। यह दूषित कफ का नाश करती है, पित्त की वृद्धि को रोकती है तथा कुपित वायु का शमन करती है।

यहाँ तुलसी के कई औषधीय उपयोग दिये जा रहे हैं। चिकीत्सीय परामर्श लेकर लाभ उठाया जा सकता है –

गुर्दे की पथरी – तुलसी दल के रस में मधु मिलाकर सेवन करें।

गीली खाँसी, सूखी खाँसी तथा दमा – तुलसी के पत्ते का रस में मधु और अदरक का रस मिलाकर सेवन करें।

हिचकी – छोटी इलायची के दानों को तुलसी के पत्ते के रस में पीसकर चाटें।

रतौंधी – श्यामा तुलसी का रस दो-तीन बूँद चौदह दिनों तक आँख में डालें।

ज्वर – तुलसी की पत्ती एक तोला और काली मिर्च दस-बारह दाने पीसकर मटर के बराबर गोली बनायें, छाया में सुखाकर दो-दो गोली, तीन-तीन घंटे पर जल के साथ सेवन करें।

उलटी – तुलसी के पत्ते का रस मधु में मिलाकर चाटें।

अजीर्ण – तुलसी की सूखी पत्तियों तथा काली मिर्च के चूर्ण का सेवन करे।

मन्दाग्नि – तुलसी का पंचांग (सूखा) तथा काली मिर्च दोनों के चूर्ण का सेवन करें।

हैजे की सामान्य दशा – तुलसी की पत्ती और काली मिर्च पीसकर सेवन करें।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

Best wishes from

FOUNDATIONS FOR LIFE

Meridian Plaza, 209 C.R.Avenue,
4th Floor, kolkata- 700006
Ph: 033-40083125
Website: www.meridiangrouprealty.in

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

बांकुड़ा शाखा की गतिविधियाँ

शाखाध्यक्ष : श्री भगवती प्रसाद बाजोरिया

उपाध्यक्ष : श्री रवि शंकर सुरेका **सचिव : श्री नरेन्द्र शर्मा**

संगठन मंत्री : श्री दिनेश सराफ **कोषाध्यक्ष : श्री अरूण ड्रोलिया**

कोरोना-काल में सेवाकार्य : शाखा द्वारा वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान जरूरतमंदों की यथासम्भव सहायता की गई। २३ अप्रैल २०२० को राहत सामग्री वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। **श्री कमल बाजोरिया** ने महती भूमिका निभाई।

१५ अगस्त २०२० को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शाखाध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद बाजोरिया ने पदाधिकारियों-सदस्यों के साथ झंडोत्तोलन किया।

दुर्गापूजा २०२० के दौरान अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से प्राप्त मास्क वितरित किए गए। कार्यक्रम में नगरपालिका उपाध्यक्ष **श्री दिलीप अग्रवाल** भी सम्मिलित हुए। कोरोना-सम्बंधित कारणों से इस वर्ष दीपावली मिलन उत्सव आयोजित करने के स्थान पर समाज के सभी घरों में शुभकामनाओं सहित मिष्टान्न भेजे गए। **सर्वश्री राजीव खंडेलवाल, विक्रम गोयनका, कमल बाजोरिया**, आदि ने सहयोग किया।

शाखा द्वारा छठ पूजा के दौरान जल, मास्क एवं सैनिटाइजर की व्यवस्था की गई। व्रतियों एवं आम लोगों ने इसकी बहुत सराहना की।

१० जनवरी २०२१ को 'प्रतिभा सम्मान समारोह' आयोजित किया गया जिसमें दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु २७ विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह में नगरपालिका बोर्ड चेयरपर्सन **श्रीमती आलोका सेन**, नगरपालिका उपाध्यक्ष **श्री दिलीप अग्रवाल**, डी.ए.वी. प्रिंसिपल **श्रीमती जीला भट्टाचार्य**, के.वी. प्रिंसिपल **श्री कमल राजोरिया**, समाजसेवी **श्री विष्णु बाजोरिया, श्री सोमेश्वर शर्मा, श्री कमल बाजोरिया, श्रीमती मंजू शर्मा, श्रीमती सुनीता सराफ, श्रीमती कीर्ति अग्रवाल**, आदि सहित समाज के पुरुष-महिलायें बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

पिकनिक

२४ जनवरी को शाखा के सदस्यों हेतु सपरिवार पिकनिक का आयोजन किया गया। नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री दिलीप अग्रवाल ने भी भाग लिया। बच्चों-महिलाओं ने प्रस्ताव रखा कि यह कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष आयोजित हो। शाखाध्यक्ष ने आश्यासन दिया कि यथासम्भव प्रयास किए जायेंगे।

२६ जनवरी २०२१ को गणतंत्र दिवस समारोह के अकसर पर उपाध्यक्ष श्री रवि शंकर सुरेका ने पदाधिकारियों सदस्यों के साथ झंडोत्तोलन किया। समारोह में नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री दिलीप अग्रवाल, समाजसेवी श्री विष्णु बाजोरिया, सर्वश्री हरिप्रसाद बाजोरिया, कमल अग्रवाल, उमेश खंडेलवाल, मनोज बाजोरिया, राजीव खंडेलवाल आदि उपस्थित थे।

प्रतिभा सम्मान समारोह

राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका को पितृशोक

वरिष्ठ पत्रकार शंकरलाल हरलालका नहीं रहे

स्व. शंकरलाल हरलालका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका के पिताश्री शंकरलाल जी हरलालका (७९) का गत ५ मार्च २०२१ को हदयाघात से देहावसान हो गया। वे विगत कुछ दिनों से अस्वस्थ थे।

स्व. शंकरलाल जी हरलालका (८ फरवरी १९४४ - ५ मार्च २०२१) गत ३७ वर्षों से कोलकाता से निरन्तर प्रकाशित हो रहे सांध्य दैनिक 'सेवा संसार' के संस्थापक एवं प्रेरक सम्पादक थे। आद्यांत आपकी छवि एक जुझारू एवं निर्भीक पत्रकार की थी।

स्व. हरलालका सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। बड़ाबाजार सिविल डिफेन्स क्लब तथा सेवा संसार सेवा शिविर के माध्यम से आपने गंगासागर, तारकेश्वर के अलावा कुम्भ मेलों में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंदजी महाराज के सान्निध्य में नि:शुल्क सेवा शिविर लगाकर वर्षों तक सेवा दी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया**, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण **सर्वश्री सीताराम शर्मा, नंदलाल रुँगटा, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, रामअवतार पोद्दार, प्रह्लाद राय अगरवाला** एवं **संतोष सराफ** ने श्री हरलालका के निधन पर शोक जताया और श्रद्धांजलि दी।

स्व. हरलालका की अंतिम यात्रा में सम्मेलन की ओर से पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री कैलाशपति तोदी** ने पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विवेक गुप्त** सहित, सम्मेलन के सदस्यगण एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर पुण्यात्मा को अंतिम विदाई दी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार की विनम्र-कृतज्ञ पुष्पांजलि!

भारत का "भूमिगत पुस्तकालय"

क्या आप जानते हैं कि राजस्थान में एक विशाल भूमिगत पुस्तकालय है? यह विशाल भूमिगत पुस्तकालय जमीन के नीचे १६ फीट गहरे स्तर पर स्थित है। इसे एशिया के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक माना जाता है। यह राजस्थान के जैसलमेर में भदरिया नामक एक छोटे से गाँव में स्थित है।

इस पुस्तकालय की स्थापना जगदंबा सेवा समिति नामक ट्रस्ट के मालिक और प्रमुख संत हरिवंश सिंह निर्मल ने की थी। यह एक देवी के मंदिर के लिए एकत्रित धन से बनाया गया था। ज्ञान को सबसे बड़ी देवी कहा जाता है। इसलिए, मंदिर बनाने के लिए एकत्रित धन का ज्ञान के मंदिर, यानी एक पुस्तकालय की स्थापना में सदुपयोग किया गया।

इस लाइब्रेरी में बहुत साफ-सुथरे तरीके से रखी गई ९ लाख से अधिक पुस्तकों का विशाल भंडार है। इस पुस्तकालय के रख-रखाव पर हर साल लगभग ६-७ लाख रुपये खर्च होते हैं।

पुस्तकालय की क्षमता लगभग ४०,००० लोगों की है। राजस्थान बहुत गर्म तापमान वाली जगह है, लेकिन पुस्तकालय ठंडा और आरामदायक है। इसके अलावा, पुस्तकालय पाठकों को पूरी तरह से शांत वातावरण प्रदान करता है। इस पुस्तकालय की दीवारें छायांकित और बहुत सुंदर हैं। इस पुस्तकालय का अंदरूनी हिस्सा बहुत खूबसूरती से डिजाइन किया गया है।

पुस्तकालय के गलियारे काफी साफ-सुथरे हैं और अच्छी तरह से प्रकाशमय हैं आपको लगता है जैसे आप एक स्वर्ग में हैं जहाँ आपके

चारों ओर ज्ञान का भंडार लिए काँच की अलमारियाँ खड़ी हैं।

इस पुस्तकालय की पुस्तकों का संग्रह शानदार है। इस पुस्तकालय में पौराणिक कथाओं, खगोल विज्ञान, ज्योतिष और इतिहास से संबंधित बहुत सारी पुस्तकें हैं। इसमें महाकाव्य और शास्त्रों का एक विशाल संग्रह भी है। इसके अलावा, इसमें कई प्रकार के शब्दकोश और विभिन्न एटलस हैं। तथापि, यह पुस्तकालय हिंदी और संस्कृत की पुस्तकों के लिए अधिक प्रसिद्ध है।

शीर्ष पर मंदिर : पुस्तकालय के ऊपर देवी भद्रिया माता का मंदिर स्थित है। मंदिर के साथ-साथ पुस्तकालय की भी देखभाल स्थानीय भक्तों द्वारा की जाती है।

KOX HOSIERY PVT. LTD.

Registered Office: 1/4D, Khagendra Chatterjee Road, Kolkata - 700 002
Corporate Office: 1202B, PS Srijan Corporate Park, GP Block, Sector V, Saltlake City, Kolkata - 700 091
Visit us : www.koxgroup.com, E-mail : info@koxgroup.com, Customer Care No.: 033-4006 4747

To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

कस्त्वत्पदाब्जं विजहाति पण्डितो
यस्तेऽवमानव्ययमानकेतनः।
विशङ्कयास्मद्गुरुरर्चति स्म यद्
विनोपपत्तिं मनवश्चतुर्दश।।

हे भगवान्, प्रत्येक विद्वान् पुरुष जानता है कि सारा जीवन आपकी पूजा के बिना व्यर्थ है। भला यह जानते हुए वह आपके चरणकमलों की उपासना में अवहेलना क्यों करेगा। यहाँ तक कि हमारे गुरु तथा पिता ब्रह्मा ने बिना किसी भेदभाव के आपकी आराधना की और चौदहों मनओं ने उनका अनुसरण किया।

विन्दते पुरुषोऽमुष्माद्यद्यदिच्छत्यसत्वरम्।
मद्गीतगीतात्सुप्रीताच्छेयसामेकवल्लभात्।।

समस्त शुभ आशीर्वादों में से प्रियतम वस्तु भगवान् हैं। मेरे द्वारा गाये गये इस गीत को जो मनुष्य गाता है, वह भगवान् को प्रसन्न कर सकता है। ऐसा भक्त भगवान् की भक्ति में स्थिर होकर परमेश्वर से मनवाच्छित फल प्राप्त कर सकता है।

चिन्तामणिप्रकरसद्यसु कल्पवृक्ष–
लक्षावृतेषु सुरभीरभिपालयन्तम्।
लक्ष्मीसहस्रशतसम्भ्रमसेव्यमानं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् प्रथम प्रजापति गोविन्द की पूजा करता हूँ जो चिन्तामणि से बने तथा लाखों कल्पवृक्षों से घिरे आवासों में गायों का पालन करते हैं तथा समस्त इच्छाओं को प्रदान करने वाले हैं। लाखों लक्ष्मियाँ अथवा गोपियाँ बड़े ही आदर तथा प्रेम से सर्वदा उनकी सेवा करती रहती हैं।

प्रचेतम ऊचुः

नमो नमः क्लेशविनाशनाय
निरूपितोदारगुणाह्ययाय।
मनोवचोवेगपुरोजवाय
सर्वाक्षमार्गेरगताध्वने नमः।।

हे भगवान्, हम आपको नमस्कार करते हैं, आप समस्त प्रकार के भौतिक दुखों को दूर करने वाले हैं। आपके उदार दिव्य गुण तथा पवित्र नाम कल्याणप्रद हैं। इसका निर्णय पहले ही हो चुका है। आप मन तथा वाणी से भी अधिक वेग से जा सकते हैं। आपका दर्शन भौतिक इन्द्रियों द्वारा नहीं किया जा सकता। इसलिए हम आपको बारम्बार सादर नमस्कार करते हैं।

शुद्धाय शान्ताय नमः स्वनिष्ठया
मनस्यपार्थं विलसद्दवयाय।
नमो जगत्स्थानलयोदयेषु
गृहीतमायागुणविग्रहाय।।

हे भगवान्, हम आपको नमस्कार करते हैं जब मन आप में स्थिर होते हैं, तो वह द्वैत जगत भौतिक सुखों का स्थान होते हुए भी व्यर्थ लगता है। आपका दिव्य रूप दिव्य आनन्द से परिपूर्ण है। अतः हम आपको नमस्कार करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के रूप में आपका प्राकट्य इस दृश्य जगत की उत्पत्ति, पालन तथा संहार के उद्देश्य से होता है।

नमो विशुद्धसत्वाय हरये हरिमेधसे।
वासुदेवाय कृष्णाय प्रभवे सर्वसात्वताम्।।

हे भगवान्, हम आपको नमस्कार करते हैं, क्योंकि आपका अस्तित्व समस्त भौतिक प्रभावों से पूरी तरह से मुक्त है। आप सर्वदा अपने भक्तों के समस्त प्रकार के कष्टों को हर लेते हैं, क्योंकि आपका मस्तिक जानता है कि ऐसा किस प्रकार करना चाहिए। आप परमात्मा रूप में सर्वत्र स्थित होने के कारण वासुदेव कहलाते हैं। आप वासुदेव को अपना पिता मानते हैं और आप कृष्ण नाम से विख्यात हैं। आप इतने दयालु हैं कि अपने समस्त प्रकार के भक्तों के प्रभाव को बढ़ाते हैं।

नमः कमलनाभाय नमः कमलमालिने।
नमः कमलपादाय नमस्ते कमलेक्षण।।

हे भगवान्, हम आपको नमस्कार करते हैं, क्योंकि आपकी नाभि से कमल पुष्प प्रकट होता है, जो समस्त जीवों का उद्गम है। आप सर्वदा कमल पुष्प की माला से सुशोभित रहते हैं और आपके चरणकमल सुगन्धित कमल पुष्प के समान हैं। आपके नेत्र भी कमल पुष्प की पंखुड़ियों के सदृश हैं, अतः हम आपको सादर नमस्कार करते हैं।

नमः कमलकिञ्ज ल्कपिशङ्गामलवाससे।
सर्वभूतनिवासाय नमोऽयुङ्क्ष्महि साक्षिणे।।

हे भगवान्, आपके द्वारा धारण किया गया वस्त्र कमल पुष्प के केसर के समान पीले रंग का है, किन्तु यह किसी भी भौतिक पदार्थ के द्वारा बना हुआ नहीं है। प्रत्येक हृदय में निवास करने के कारण आप समस्त जीवों के समस्त कार्यों के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। हम आपको बारम्बार सादर नमस्कार करते हैं।

असावेव वरोऽस्माकमीप्सितो जगतः पते।
प्रसन्नो भगवान्येषामपवर्गगुरुर्गतिः।।

हे जगत् के स्वामी, आप भक्तियोग के वास्तविक शिक्षक हैं। हमें सन्तोष है कि आप ही हमारे जीवन के परम लक्ष्य हैं और हम प्रार्थना करते हैं कि आप हम पर प्रसन्न हों। यही हमारा इच्छित वर है। हम आपकी पूर्ण प्रसन्नता के अतिरिक्त और कुछ भी कामना नहीं करते।

Kanoria Foundation
WORK WITH DEVOTION

HAPPINESS COMES IN MANY COLOURS. FIND YOURS IN THE Happy Rainbow Box.

SREI
Together We Make Tomorrow Happen

Srei, since three decades, has been in the business of financing infrastructure, developing projects and empowering entrepreneurs. Our Happy Rainbow Box is a collection of such happy and optimistic thoughts that have the potential to change the world for the better.

Infrastructure Project & Equipment Finance | Medical, IT, Agriculture & Mining Equipment Finance | Infrastructure Project Advisory, Development & Investments | Investment Banking | Insurance Broking

Log on to www.happyrainbowbox.com and #SpreadTheHappy

L&K | SAATCHI & SAATCHI

एक भाषा की विकास यात्रा

(गतांक से आगे – समापन किस्त)

– अतुल कनक

मध्यकाल में राजस्थानी का सबसे लोकप्रिय रूप डिंगल काव्य के तौर पर देखने को मिलता है। डिंगल हालाँकि वीररस के निरूपण के लिये सबसे अनुकूल शैली है लेकिन डिंगल में अन्य काव्य भी देखने को मिलते है। डिंगल और पिंगल मध्यकालीन राजस्थानी काव्य की दो प्रमुख शैलियाँ है। डिंगल शब्द की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। ठीक इसी तरह कुछ लोग डिंगल को शैली नहीं मानकर राजस्थानी भाषा का ही एक रूप भी मानते हैं। जहाँ डिंगल काव्य में वीररस मूलक ध्वन्यात्मक काव्य का आधिक्य है, वहीं पिंगल काव्य में राजस्थानी और बृज का मिश्रण देखने को मिलता है। विद्वानों के अनुसार इसी पिंगल शैली से आधुनिक गुजराती भाषा का विकास हुआ। यह महज संयोग नहीं है कि गुजराती और राजस्थानी दोनों ही भाषाएँ अपनी प्रारंभिक धरोहर के तौर पर समान ग्रंथों का नामोल्लेख करती हैं। सन् १४५५ में पद्मनाभ द्वारा लिखा गया 'कान्हइदे प्रबंध' नामक ग्रंथ ऐसी ही रचना है जिसे दोनों भाषाऐं अपने प्राचीन ग्रंथों में गिनती हैं। शायद इसीलिये गुजराती भाषा के जाने माने विद्वान झवेरचंद मेघाणी ने तो राजस्थानी को ही गुजराती की जननी माना है। इसका एक बड़ा कारण यह भी रहा हो शायद कि प्राचीन गुजराती और प्राचीन राजस्थानी के भाषिक रूप आपस में बहुत गहरे गूँथे हुए हैं और इनमें प्राकृत - अपभ्रंश की समान विशेषताएँ मिलती हैं। मेघाणी कहते हैं – "इस दौर का पर्दा उठाकर जो आप आगे बढ़ो तो आपको कच्छ-काठियावाड़ से लेकर प्रयाग के भूखण्ड तक फैली एक भाषा दिखेगी। इस दूर-दूर तक फैली हुई भाषा का बोलचाल का नाम पुरानी राजस्थानी है। इसमें ही मेड़ता की मीरा अपने पदों की रचना करती। गिरनार की तलहटी में बैठकर नरसीमेहता प्रभू पदों की रचना करता जो यात्रियों के कंठ में बास करके जयपुर-उदयपुर तक पहुँच जाते। चारणों के दोहे भी राजस्थान की किसी सीमा में से उतरते और कुछ रूप बदलकर काठियावाड़ में घर-घर पहुँच जाते। इसकी बेटियाँ ब्रजभाषा, गुजराती और आधुनिक राजस्थानी का नाम धारण करके स्वतंत्र भाषाऐं बन गई। "पश्चिमी राजस्थान का मरूथलीय क्षेत्र और गुजरात का कच्छ क्षेत्र आज भी परस्पर अनेक लोककथाओं की स्मृतियों से जुड़े हुए हैं। 'मारू-गुर्जर' के माध्यम से दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक निकटता रही है। यही कारण है कि ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी ईस्वी तक दोनों प्रदेशों की भाषाओं में भी अभिन्नता परिलक्षित होती है। आज भी राजस्थानी की एक प्रमुख बोली 'वागड़ी' अपनी प्रवृत्तियों की दृष्टि से गुजराती के बहुत निकट है।

राजस्थानी और अपभ्रंश के अंतर को प्रो. नरोत्तम स्वामी ने संवत् १२०० के आसपास चिन्हित किया है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि राजस्थानी का विकास अपभ्रंश से माना गया है। हालाँकि विद्वानों में इस बात को लेकर कुछ मतभेद है कि राजस्थानी का विकास अपभ्रंश के किस रूप से हुआ? लेकिन भाषा-विद्वानों का एक बड़ा हिस्सा मानता है कि राजस्थानी की उत्पत्ति शैरसैनी अपभ्रंश से ही हुई है। इन विद्वानों में पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू श्यामसुंदर दास, डा. उदयनारायण तिवारी, पं. जनार्दनराय नागर और एल.पी. तैस्सीतौरी के नाम प्रमुख हैं।

राजस्थान की प्राचीन प्रवृत्तियों के अध्ययन के लिये प्राचीन जैन साहित्य एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। सच बात तो यह है कि प्राचीन राजस्थानी के विकास में जैन संतों और श्रावकों द्वारा रचित साहित्य की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन इन ग्रंथों पर समय और स्थान के उल्लेख के अभाव ने राजस्थानी भाषा के प्राचीन प्रसंगों की व्याख्या को दुरूह बना दिया है। कुछ लोगों का मानना है कि पाँचवीं सदी के लब्ध-प्रतिष्ठ जैन विद्वान सिद्धसेन दिवाकर ने राजस्थान की यात्रा की और स्थानीय भाषा में साहित्य सृजन किया। निकटवर्ती मालवा में तो उनका प्रवास प्रमाणित है। जैन संतों की चर्या के मद्देनजर इस संभावना से इंकार भी नहीं किया जा सकता कि मालवा प्रवास के लगभग ही सिद्धसेन दिवाकर ने राजस्थान में भी प्रवास किया हो। प्राचीनकाल में मध्यप्रदेश का मालवा और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान का सौंथवाड़ क्षेत्र सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से इतने सन्निकट रहे हैं कि आज भी दोनों अंचलों की भिन्नता कृत्रिम परिलक्षित होती है।

आठवीं सदी में हरिभद्र सूरि ने चित्तौड़ में रहकर 'धूर्ताख्यान' की रचना की। 'सच्च उरिय महावीर उत्साह' के रचयिता कवि धनपाल की रचनाओं में अपभ्रंश से राजस्थानी के विकास के चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। दरअसल, प्राचीन राजस्थानी के प्रारंभिक प्रमाण जैन ग्रंथों से शायद इसलिये प्रारंभ होते हैं क्योंकि धार्मिक परंपरा के तहत इन महत्वपूर्ण ग्रंथों को सँभालकर रखा गया। सन् ९७२ ई में धनपाल जैन द्वारा लिखे गये 'पाइयलच्छीनाममाला' नामक ग्रंथ को डा. राजेन्द्र बारहठ ने राजस्थानी का पहला शब्दकोष माना है। वो लिखते हैं – "पाड़यलच्छीनाममाला के रचयिता का क्षेत्र राजस्थान है। इन्होंने अपने क्षेत्र की लोकवाणी के जन-जन से जुड़े शब्दों का संग्रह का एक महत्वपूर्ण कार्य किया। पाड़यलच्छीनांममाला में २७९ कथाऐं हैं, और इनमें ९९८ शब्दों के पर्याय दिये गये है। धारानगरी के शासक मुंज की राजसभा के सदस्य धनपाल ने इस ग्रंथ की रचना अपनी छोटी बहिन सुंदरी के लिये की थी। बाद में राजा मुंज से मनमुटाव होने के बाद धनपाल ने राजस्थान के सांचैर नगर को अपना कर्मक्षेत्र बनाया।

भाषा वैज्ञानिक सुनीति कुमार चाटुज्या ने राजस्थानी भाषा के निम्न विशेष लक्षण बताये हैं –

१. 'अ' के स्थान पर 'इ' का प्रारंभिक उच्चारण। जैसे मिनख, सिरदार, पिण्डत आदि
२. कुछ प्रसंगों में 'इ' और 'उ' का लोप। जैसे दन (दिन), मानस (मानुस), कँवर (कुमार)।
३. मूर्धन्य 'ण' और 'ळ' राजस्थानी की दो विशिष्ट ध्वनियाँ हैं।
४. राजस्थान की कई बोलियों में तालव्य ध्वनियों का दंत्य उच्चारण सुनाई देता है। कुछ प्रसंगों में स का उच्चारण ह किया जाता है।
५. महाप्राण अघोष वर्णो का विशेष उच्चारण और ह का विकृत उच्चारण मिलता है।
६. बहुत सी जगहों पर देखा जाता है कि 'ह' लिखा नहीं जाता लेकिन उच्चारण के समय उसकी ध्वनि अक्षर को अघोष महाप्राण स्पुष्ट ध्वनि के नजदीक ला खड़ा करती है।
७. उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष के सर्वनामों की षष्ठी के एकवचन में 'म्हारो-थारो' जैसे रूप् राजस्थानी और गुजराती की विशिष्टता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार आधुनिक राजस्थानी को प्राचीन राजस्थानी से अलग करने वाले तत्व कई हैं। मसलन -

१. ऐ और औ नामक दो नये स्वरों का विकास हुआ।
२. नपुंसक लिंग या तो छोड़ दिया गया या फिर उसे पुलिंग में परिवर्तित कर दिया गया।
३. शब्द के उच्चारण के अंत में आने वाला 'अ' समाप्त हो गया।
४. अधिकांश शब्दों के अंत में आने वाले 'इ' का लोप हो गया। जैसे - करि से कर और गति से गत हो गया।

किसी भी भाषा के पाठकों में उसका व्याकरण, शब्दकोष, लिपि, उपयोग करने वाले, क्षेत्र और साहित्य प्रमुख तत्व होते हैं। यह बताया जा चुका है कि राजस्थानी का अपना एक समृद्ध व्याकरण है। हालांकि धनपाल जैन को ९७२ ईस्वी में ही राजस्थानी का पहला शब्दकोष रचने का श्रेय दिया जाता है लेकिन आधुनिक दौर में राजस्थानी का विशद शब्दकोष सीताराम लालस ने तैयार किया। राजस्थानी की शब्द सामर्थ्य का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें ऊँट के लिये २५० से अधिक पर्यायवाची शब्द हैं तो हर देशी महीने में बरसने वाले बादलों के लिये अलग-अलग नाम। राजस्थानी का विस्तृत मुहावराकोष है। जहाँ तक लिपि का सवाल है, राजस्थानी रचनाएँ पहले मुड़िया लिपि से लिखी जाती थीं। आजादी के तुरंत बाद पं. गोविन्द वल्लभ पंत ने राजस्थान के नेताओं और रचनाकारों से आग्रह किया कि वो राष्ट्रीय एकता की तात्कालिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए देवनागरी लिपि का ही इस्तेमाल करें और इस प्रकार धीरे-धीरे देवनागरी ही राजस्थानी भाषा की लिपि हो गई। लेकिन इससे क्या? क्या रोमन में लिखी जाने वाली विविध भाषाओं को अलग-अलग मान्यता नहीं दी जाती? क्या देवनागरी लिपि में ही लिखी जाने वाली संस्कृत भाषा को भारत में पृथक भाषा के तौर पर मान्यता प्राप्त नहीं है? क्षेत्रीय प्रसार की दृष्टि से राजस्थानी बोलने वालों का क्षेत्र देश में हिंदी के बाद दूसरे स्थान पर माना गया है और बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से राजस्थानी देश की छह शीर्षस्थ भाषाओं में एक है। देश दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों में राजस्थानी भाषा का अध्ययन और अध्यापन होता है और वहाँ राजस्थानी एक पृथक विभाग के तौर पर मान्यताप्राप्त है। राजस्थान में राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने के लिये एक पृथक अकादमी स्थापित है जिसे २१ फरवरी १९७४ को केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने मान्यता दी। उसी वर्ष से साहित्य अकादमी दिल्ली देश की अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ राजस्थानी में भी सार्थक सृजन करने के लिये हर वर्ष एक रचनाकार को पुरस्कृत करती है। गद्य और पद्य दोनों की विविध विधाओं में राजस्थानी में श्रेष्ठ और सार्थक साहित्य का सृजन अनवरत हो रहा है। एक भाषा की स्वतंत्र पहचान के लिये इससे अधिक और क्या चाहिये?

[अतुल कनक राजस्थानी भाषा के विख्यात साहित्यकार हैं। इनके द्वारा रचित उपन्यास 'जूण-जातरा' के लिये उन्हें सन् २०११ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।]

(पृष्ठ २० का शेषांश)

सिरदर्द – तुलसी के बीजों के चूर्ण का मधु के साथ सेवन करें।
बच्चों के यकृत की गड़बड़ी – तुलसी पत्र रस का सेवन करायें।
छोटा घाव – तुलसी के बीजों को पीसकर लगायें।
दाँत दर्द – तुलसी पत्र रस तथा कपूर को रुई के फोहे से लगायें।
सूजन – तुलसी पत्र रस लगायें।
बच्चों का पेट दर्द – तुलसी के पत्तों एवं अदरक का सेवन करायें।
बच्चों का कान दर्द – तुलसी पत्र रस (गुनगुना) कान में डालें।
बच्चों का पेट फूलना – तुलसीदल और पान के पत्ते का रस (गुनगुना) पिलाये। इससे पेट साफ होता है और आफरा में बहुत लाभ होता है।
बच्चों का दाँत निकलना – तुलसी के पत्तों का रस मधु में मिलाकर मसूड़ों पर मले तथा थोड़ा चटायें। इससे दाँत आसानी से निकलते हैं।
लू लगने की दवा – तुलसी के पत्तों का रस चीनी मिलाकर पीयें।
अनावश्यक रजस्त्राव – तुलसी की जड़ का चूर्ण पान में रखकर खिलाने से लाभ होता है।
चक्कर आना – तुलसी के पत्तों के रस में चीनी मिलाकर चाटें।
प्रसव पीड़ा – तुलसी के पत्तों का रस पिलायें।
मूत्रदाह – मूत्रदाह में तुलसी दल चबावें।
मुख के छाले – तुलसीदल और चमेली की पत्तियाँ चबायें।
प्रदर – तुलसीपत्र रस दो तोला चावल के माँड़ में मिलाकर पियें। सात दिन में लाभ होगा। दवा के सेवन के समय दूध-भात खायें।
शीघ्रपतन – दो तुलसीदल और थोड़ा तुलसी बीज पान में रखकर खायें।

इस तरह स्पष्ट है कि तुलसी एक प्राकृतिक वरदान है।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

श्री केशव कुमार डालमिया
पोद्दार कालोनी, हाउस नं.-२
खेतराजपुर, सम्बलपुर - ७६८००३
ओडिशा
मो : ७२०५१५०५५५

श्री शिव रतन अग्रवाल
मे. बजरंगलाल बद्री प्रसाद
१५७, एन.एस. रोड,
द्वितीय तल, मेटल मार्केट,
कोलकाता-७००००१
मो : ९३३९८७१९३७

श्री विजय कुमार लोहिया
मे. विशारदा चैरिटेबल ट्रस्ट
२ए, चेलियामन कालोनी
पेपर मिल्स रोड, पेरावेल्लूर
चेन्नई - ६०००८२, तमिलनाडु
मो : ९८४००२४७८१

श्री संतोष कुमार पारीक
मे. शारदा रिरोल्र्स प्रा. लि.
डी/३, सेठ देवकरनदास काम्पलेक्स
कचहरी रोड, राउरकेला - ७६९०१२
सुन्दरगढ़, ओडिशा
मो : ९४३७०४३१४४

श्री विष्णु दयाल अग्रवाल
मे. बी.डी. ईन्टरप्राईजेज
हाउस नं.-ईएम-२०
बसंती कालोनी, राउरकेला-७६९०१२
सुन्दरगढ़, ओडिशा
मो : ९९३७२०१२०२

श्री विकास कुमार सिंघल
मे. सनवीम मर्केंटाईल वेन्चर्स प्रा.लि.
जीव टाउन, कोचिन-६८२००२
केरला
मो : ९४४७१२४७५२

श्री देवकी नंदन सिंघल
मे. ए.बी.एल.ई.आटोमोबाईल्स प्रा. लि.
महामंगलम, एन.एच. रोड
एर्नाकुलम, कोचिन - ६८२०२५
केरला
मो : ९३८७२१८८८६

श्री महेश कुमार गुप्ता
मे. आर.बी.जी. शिवा मेटल्स
VI/९३, जीवटाउन,
कोचिन-६८२००२, केरला
मो : ९६५६६४०००००

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल
मे. प्रिमियम फेरो एलायँज लि.
पोस्ट - विनानी पूरम, अलवई,
एर्नाकुलम, कोचिन-६८३५०२
केरला
मो : ९८४७०४४७१२

श्री आलोक कुमार साबू
मे. सावोसदन, एम.एम. अली रोड,
कालीकट - ६७३००२
केरला
मो : ९३४९८८४४००

श्री प्रमोद कुमार ढाढनियाँ
८, कैमक स्ट्रीट, नौवाँ तल,
रूम नं.-९१३,
कोलकाता - ७०००१७
मो : ९८३१०३४३४३

श्री अरूण छावछरियाँ
मे. सर्वश्री ओम इंजिनियरिंग वर्क्स
कामर्स हाउस, शारदा बाबू स्ट्रीट,
नीयर लाईन टैंक, राँची-८३४००१
झारखंड
मो : ९४३११७७५८३

श्री दिनेश कुमार पोद्दार
मे. वत्सल आटोव्हील्स प्रा. लि.
एन.एच.-३३, नीयर रामगढ़ कालेज
टायर मोड़, रामगढ़ कैन्ट-८२५१०१
झारखंड, मो : ९४७०३६२८९९/
९८५२२१२१२३

श्री अभय कुमार श्राफ
मे. लक्ष्मी देवी ट्रस्ट
लक्ष्मी निवास, सी.पी. ड्रोलिया रोड
बी. देवघर - ८१४११२,
झारखंड
मो : ९४३११३२२१७

श्री संजय कुमार चौधरी
मे. बालाजी सेलफोन प्रा. लि.
जोखीराम चैम्बर्स, चौथा तल,
४०१-४०२, नीयर लेयर अपार्टमेंट
मेन रोड, राँची-८३४००१, झारखंड
मो : ९३०४७७११९९/९८३५१९१०५५

श्री गोकुल चंद बजाज
मे. अश्विन टेक्सटाईल्स
०-३८३-३८४, एल.जी. न्यु
टेक्सटाईल मार्केट, रिंग रोड,
सुरत-३९५००२, गुजरात
मो : ९३७७७७८३३३

श्री दीपक कुमार गुप्ता
हैप्पी होम
जगन्नाथ टेम्पल रोड,
एट/पो.-भवानीपटना - ७६६००१
कालाहांडी, ओडिशा
मो : ९४३७०७०१३८

श्री लाल चंद चौधरी
मे. लालू इंटरप्राईजेज
टेलीफोन भवन के सामने
भवानीपटना - ७६६००१
कालाहांडी, ओडिशा
मो : ९४३७१०५०९८

श्री राजेश कुमार अग्रवाल
मे. विहारीजी ट्रेडर्स
भवानीपटना - ७६६००१
कालाहांडी, ओडिशा
मो : ९४३७०७३५६७

श्री जगमोहन अग्रवाल
द्वारा - महेश हाण्डा, केसिंगा रोड,
भवानीपटना - ७६६००१
कालाहांडी, ओडिशा
मो : ९४३७१५४८४९/
७९७८७३७६७२

श्री गुरू प्रसाद अग्रवाल
मे. जयहिन्द एजेन्सी
धरमगढ़, कालाहांडी-७६६०५१
ओडिशा
मो : ९४३७३२८७२१/
७००८५०६०२०

श्री किशोर अग्रवाल
मे. हेमन्त अग्रवाल एण्ड कं.
अरविन्द पाड़ा, धरमगढ़-७६६०१५
कालाहांडी, ओडिशा
मो : ९४३७९६६३१२

श्री मदन लाल अग्रवाल
एट/पो/पी.एस.-सैंतला
मेन मार्केट, बलाँगीर-७६७०३२
ओडिशा
मो : ९४३७०३६१३७/
६३७२८२५५५२

श्री अतुल कुमार अग्रवाल
ए-३०३, पंचशील अपार्टमेंट
डॉ. उषा रानी लेन, लालपूर
राँची - ८३४००१, झारखंड
मो : ९४३११०९३५९

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

श्री कमल कुमार अग्रवाल
श्री वेंकटेश आयरन एण्ड अलायज (इं.) लि.
सी-२०३, श्री राम गार्डेन अपार्टमेंट
कांके रोड, राँची-८३४००८
झारखंड, मो : ९४३११४२२६०

श्री बिजय कुमार अग्रवाल
मे. पलरीवाल इण्डस्ट्रीज प्रा. लि.
हॉरहेप रोड,
पो.-माहीलोंग- ८३५१०३,
राँची, झारखंड
मो : ९४३११०७९५१

श्री सत्यनारायण गुप्ता
मे. गायत्री ट्रेडिंग कं.
स्वाधीन पाड़ा,
पो. तितलागढ़- ७६७०३३,
बलाँगीर, ओडिशा
मो : ९४३७१५०७९२

श्री तरुण कुमार मलानी
मे. जनता आटॉ स्पेयर्स
कचहरी रोड,
राउरकेला-७६९०१२
सुन्दरगढ़, ओडिशा
मो : ९४३७०४६३०९

श्री रमेश चन्द्र साहा
मे. श्री लक्ष्मी इं. हाउस
पंचा महल्ला, अंगुल-७५९१२२
ओडिशा
मो : ७८९४४३२१६२/
७००८७७००६२

श्री गिरधारी लाल केडिया
मे. केडिया राईस मिल
तुसरा - ७६७०३०
बलाँगीर, ओडिशा
मो : ९४३७२१०७८७/
९५५६२४७९५९

श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल
मे. हरि शंकर रोड
बलाँगीर-७६७०३८,
ओडिशा
मो : ९४३७३५९५०८

श्री राज करन दफ्तरी
मे. दफ्तरी टी इस्टेट प्रा. लि.
दफ्तरी बिल्डिंग
किशनगंज - ८५५१०८, बिहार
मो : ९४३००५५५५५

श्री लक्ष्मण लाल महीपाल
एन-३/८७. आई.आर.सी विलेज
नयापल्ली, भुवनेश्वर-७५१००६
खुर्दा, ओडिशा
मो : ९४३७०५१५१०

श्री राधे श्याम बंसल
मे. ई-डामिनर सिस्टम प्रा. लि.
सिल्वर स्प्रिंग ब्लाक-८, फ्लैट-७एवी
५, जे.बी.एस, हाल्देन एवेन्यु
कोलकाता - ७००१०५
मो : ९८३०२६५०७५

श्री अरूण कुमार जैन
१ए, रेडिएंट पार्क बिल्डिंग
२०१, न्यू पार्क स्ट्रीट
तोपसिया पोलिस स्टेशन के सामने,
कोलकाता-७०००१७
मो : ९८३६२८७८२६

श्री सुदीप कुमार लोहिया
मे. विनर सिस्टम्स प्रा. लि.
९सी, लार्ड सिंहा रोड,
कोलकाता - ७०००७१
मो : ९३३९५०३००७

डॉ. सवर धनानियाँ
मे. म्युचुअल टेक्नोलॉजीज प्रा. लि.
७३, बैंट्रिक्ट स्ट्रीट
कोलकाता - ७००००१
मो : ९८३००४९५०५

श्री अरुण बकरीवाल (अग्रवाल)
मे. मिका मोल्ड
टाटा चाईबासा रोड
पो. - सुन्दरनगर - ८३२१०७
जमशेदपुर, ई.सिंघभूम, झारखंड
मो : ९९३४३०८६४६

श्री अमित कुमार मोदी
मे. ए.के.एम. ग्रुप
डिवाईन ब्लीस,
२/३, जजेज कोर्ट रोड,
कोलकाता - ७०००२७
मो : ९८३००२२९५२

श्री रमेश गोयनका
मे. रमेश गोयनका एण्ड कं.
एडवोकेट्स एण्ड टैक्स कन्सलटेंट्स
प्रतिष्ठा, ३०, विष्णुपुर मेन रोड.
गुवाहाटी - ७८१०१६, असम
मो : ७६३७०११०००

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल
मे. विनायिका एजेन्सी
शहीद चौक, जे.जे. रोड,
राँची-८३४००१, झारखंड
मो : ९४३११७००४२

श्री रिंकु अग्रवाल
२११, हरि ओम टावर कमर्शियल
काम्पलेक्स, लालपूर-८३४००१,
राँची-८३४००१, झारखंड
मो : ९८३५३७०९८८/
९८०१३७४२८८

श्री राजेश कुमार सोंथलिया
मे. प्रिजन टेक्नीक प्रा. लि.
डी.बी-१२६, साल्टलेक
सेक्टर-१, कोलकाता-७०००६४
मो : ९८३१०७७१३०

श्री प्रदीप कुमार अगरवाला
विलेज - मोती गोडा
पो.-राखा कॉपर प्रोजेक्ट
जिला - ई.सिंघभूम-८३२१०६
झारखंड
मो : ९४३१३०१८५५

श्री पूनित कुमार अग्रवाल
हरिओम टावर
६१४, छठवाँ तल, सर्कुलर रोड,
लालपूर, राँची-८३४००१
झारखंड
मो : ९८०१३७०९६७

श्री अशोक कुमार गुप्ता
मे. पंचदीप प्रोपर्टीज
४०३, हिंद अपार्टमेंट
५४५, जी.टी. रोड (साउथ)
हवड़ा - ७१११०१, पं.बं.
मो : ९३३१००८६२२

श्री माखन लाल गोयल
मे. गोयल स्टोर
मेन रोड, ब्रजराजनगर
झाड़सुगुड़ा - ७६८२१६,
ओडिशा
मो : ९४३७२५७५३२

श्री संजय कुमार कानोड़िया
मे. डब्ल्यु.एस.ई. वेन्चर्स एल एल बी
द लेगेसी, तीसरा तल, ३५ए एण्ड
३५बी, २५ए, शेक्सपीयर सरणी
कोलकाता - ७०००१७
मो : ९३३१००८३८५

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

श्री ओम प्रकाश पोद्दार
मे. कुबेर बैंकिंग लिगल कंस्लटेंट
बी/१३०४, मंत्री इलिगेन्स बैनरहाटा,
मेन रोड, शापर स्टाप के नजदीक,
बैंगलोर-५६००७६, कर्नाटक
मो : ९७०७५७७७७७

संरक्षक सदस्य

श्री सुन्दर कुमार चौधरी
४९बी, ब्लाक-सी,
न्यु अलीपुर
कोलकाता - ७०००५३
मो : ९८३१०२५६१९

श्री दामोदर लाल मोर
१८३, एस.के. देव रोड, पी.
एस. लेक टाउन
फ्लैट नं.-४एच
कोलकाता - ७०००४८
मो : ८०१७४९०६३२

संरक्षक सदस्य

श्री पवन कुमार झुनझुनवाला
डेहरी आनशॉन, बड़ा पत्थर,
डेहरी-८२१३०७
बिहार
मो : ८०८३२१०३०८

श्री प्रशांत बंका
रुम नं.-४०२, चौथा तल
पुष्पांजली बैंकटेश, भण्डार
बगीचा, बुद्ध मार्ग
पटना - ८००००१, बिहार
मो : ९३३४११२२१२

श्री रोहित सिकारीया
हजारीमल धर्मशाला के नजदीक
लाल बाजार बेतिया, पश्चिम
चम्पारण-८४५४३८, बिहार
मो : ९७७१४०००००

श्री संजय राईका
ओ.टी. ०३, समता कालोनी
रायपुर - ४९२००१
छत्तीसगढ़
मो : ९३०२३९८०००

श्री अनिल कुमार बगड़िया
ए-६०३, केदार अपार्टमेंट्स
सेक्टर-९, रोहिनी
दिल्ली - ११००८५
मो : ९८१०६२०५११

श्री मनोज कुमार अगरवाला
मेन रोड, अपो कैनरा बैंक
झरीया - ८२८१११
झारखंड
मो : ९८३००६२९३२

श्री शिव कुमार टेकरीवाल
मे. पवन सिल्क, ३५/१, मातृ छाया
काम्पलेक्स, चौथा तल, अप्पाजी
रोड लेन, जे.एम. रोड क्रास,
बैंगलोर-५६०००२, कर्नाटक
मो : ९३४२५०४५६८

श्री सतीश मित्तल
मे. साउथर्स कार्गो कैरियर्स (इं)
५०/१, द्वितीय क्रास,
के.पी.एन. एक्सटेंशन,
बैंगलोर-५६०००२, कर्नाटक
मो : ९८८०१९३४००

श्री पंकज जालान
ई.५०४, वैष्णवी रथनाम
अपार्टमेंट, एस.एम. रोड,
टी. दशरहाली
बैंगलोर-५६००५७, कर्नाटक
मो : ९४४८२३७१९८

श्री जय किशन बजाज
ए-७०२, नार्गाजुन ग्रीनरीड्ज
अपार्टमेंट, सेक्टर-II ,
एच.एस.आर लेआउट,
बैंगलोर-५६०१०२, कर्नाटक
मो : ९३४२१६७२७६

श्री संजीव अग्रवाल
१४५/२, डी. राजगोपाल रोड
संजयनगर, अपो पोलिस स्टेशन
बैंगलोर-५६००९४, कर्नाटक
मो : ९८४४००१४६१

श्री प्रदोप मुरारका
नवगढ़,
कर्नाटक
मो : ९८४५०२५२००

श्री संतोष लाठ
कर्नाटक

श्री मनोज कुमार सरावगी
कर्नाटक

श्री नीकेस गुप्ता
मे. गुप्ता इण्डस्ट्रीयल एण्ड
इंजिनियरिंग, मंगलदास मार्केट,
तिलक रोड, अकोला -
४४४००१, महाराष्ट्र
मो : ९८२३०६९४२१

श्री नीरज बोरा
उत्तर प्रदेश

श्री सुनील पदन लाल जैन
महाराष्ट्र

श्री राजेश जैन
सनसिटी ब्लाक-ई,
फ्लैट नं. १०८, प्रथम तल
१०५/१, विधान नगर रोड
कोलकाता - ७०००६७
मो : ९८३१०९३९३१

श्री अपूर्वा गोयनका
मे. गोयनका व्यापार प्रा. लि.
२, लाल बाजार स्ट्रीट, तोदी
चेम्बर्स, रूम नं.-२१७, द्वितीय
तल, कोलकाता-७००००१
मो : ९८३०८२५१४६

श्री पवन कुमार गोयनका
मे. स्वास्तिक इंटरप्राईजेज
२, लाल बाजार स्ट्रीट
तोदी चेम्बर्स रूम नं.-२१७
द्वितीय तल, कोलकाता-
७००००१
मो : ९८३००४२०३९

श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल
मणीकला, फ्लैट नं.-९डीए
१५६सी, मानिकतल्ला मेन रोड,
काँकुरगाँछी,
कोलकाता-७०००५४
मो : ९८३०१०५७३१

संरक्षक सदस्य

श्री प्रदीप बंसल
मे. हरियाणा ट्रैक्टर्स
पी-२७, प्रिंसेप स्ट्रीट, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता-७०००२७
मो : ९८३१०९२५०२

श्री ललित बेरिवाल
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन. ३२,
साल्टलेक, सेक्टर-V,
कोलकाता-७०००९१
मो : ९८३१०१२३७६

श्री गोविन्द बेरिवाल
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन.-३२,
साल्ट लेक, सेक्टर-V
कोलकाता - ७०००९१
मो : ९८३१०१२३७५

श्री पुरुषोत्तम बेरिवाला
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन.-३२
साल्ट लेक, सेक्टर-V
कोलकाता - ७०००९१
मो : ९८३००९१३६६

श्री रवि बेरिवाला
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन.-३२
साल्ट लेक, सेक्टर-V
कोलकाता - ७०००९१
मो : ९८३१०२३४१४

श्री ब्रिजेश बेरिवाला
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन.-३२
साल्ट लेक, सेक्टर-V
कोलकाता - ७०००९१
मो : ९८३००९१३८८

श्री मनीष बेरिवाला
मे. श्याम स्टील इंण्डस्ट्रीज लि.
श्याम टावर्स, इ.एन.-३२
साल्ट लेक, सेक्टर-V
कोलकाता - ७०००९१
मो : ९८३१०२३४१३

श्री अशोक कुमार अग्रवाल
१४, ईश्वर दत्ता लेन
प्रथम तल, हवड़ा-७१११०१
प. बं.
मो : ९८३००३६४३१

श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल
मे. द ग्रोव टी क. लि.
हाउट स्ट्रीट, नौवा तल
८६ए, तोपसिया रोड (साउथ)
कोलकाता - ७०००४६
मो : ९८३००३२१२०

श्री सुरेन्द्र कुमार खेतान
३३, तिलक रोड
रानीगंज - ७१३३४७
प. बं.
मो : ९४३६३१४०१७

श्री राघव राज कानोड़िया
३२क्यु, न्यु रोड
अलीपूर,
कोलकाता - ७०००२७
फो : ०३३-६७०१५२०७

सम्मेलन के सदस्य बनें और बनायें।

आजीवन सदस्य

श्री दिनेश कुमार चाण्डक मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री दिनेश कुमार जैन** मेन रोड, धेमाजी, असम	**डॉ. गिरिराज शर्मा** थाना चारीअली, शिवसागर, असम	**श्रीमती दुर्गा देवी संचेती** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री दुर्गा प्रसाद पंडिया** होलेसर डिविजन, सोनितपुर, असम
श्री द्वारका प्रसाद पारिक शंकर मंदिर रोड, शिवसागर, असम	**श्री द्वारकेश गोयल** जी.एन.बी. रोड, सोनितपुर, असम	**श्री गौरी शंकर राठी** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती गीता देवी मालू** खालिबारी रोड, धेमाजी, असम	**श्री गोविंद अग्रवाल** डी.के. रोड, लखिमपुर, असम
श्री गोपाल किशन चाण्डक जे.पी. अग्रवाला पथ, शिवसागर, असम	**श्रीमती गुड्डी जैन** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती गुलाब डुग्गड़** जैन गली, गुवाहाटी, असम	**श्री हरि प्रसाद बूबना** एम.जी. रोड, सोनितपुर, असम	**श्री हरीश तयाल** एम.जी. रोड, सोनितपुर, असम
श्री हर्षवर्धन नाहटा थाना चारीअली, शिवसागर, असम	**श्रीमती हेमलता जालान** मचखोवा, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती इंद्रा अग्रवाल** फाटासिल मेन रोड, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती इंद्रा देवी डागा** लिखबली रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती इंद्रा देवी संचेती** पॉल पट्टी, धेमाजी, असम
श्री जगदीश हेडा डी.के. रोड, लखिमपुर, असम	**श्री जगदीश प्रसाद खेमानी** टेम्पल रोड, शिवसागर, असम	**श्री जगदीश प्रसाद शर्मा** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री जय किशन बजाज** डी.के. रोड, लखिमपुर, असम	**श्रीमती जमुना बिहानी** मेन रोड, धेमाजी, असम
श्रीमती जामवंती झूंवर एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम	**श्रीमती जया सुरेका** अठगाँव, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती जयश्री बनथिया** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती झुमा देवी मालू** पश्चिम सियांग, अरूणाचल प्रदेश	**श्री झुमरमल शर्मा** मेन रोड, धेमाजी, असम
श्री जितेंद्र अग्रवाल डी.के. रोड, लखिमपुर, असम	**श्री जितेंद्र गिरिया** डी.के. रोड, लखिमपुर, असम	**श्री जुगल किशोर बजाज** जी.एन.जी पथ, शिवसागर, असम	**श्री ज्योति भीमसरिया** फैन्सी बजार, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती ज्योति मालू** पॉल पट्टी, धेमाजी, असम
श्रीमती ज्योति शर्मा मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती कविता करवा** वॉर्ड नं.-१३, लखिमपुर, असम	**श्री कैलाश शर्मा** सोनितपुर, बालिपारा, असम	**श्री काली चरण शर्मा** सोनितपुर, बालिपारा, असम	**श्री कमल किशोर बलदेवा** टी.बी. रोड, लखिमपुर, असम
श्री कमल कुमार मालू मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री कमल कुमार संचेती** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री कमल मीणा** लाईन नं.-१०, सोनितपुर, असम	**श्री कन्हैयालाल पारिक** वॉर्ड नं-१०, धेमाजी, असम	**श्री कनक सेठिया** केदार रोड, गुवाहाटी, असम

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**

- **Radiology**

- MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
- Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- **Cardiology**

- ECG | - Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
- Treadmill Test (TMT)

- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 27th March 2021
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com